अक्टूबर 2024

सरदार पटेल
एकता की विरासत

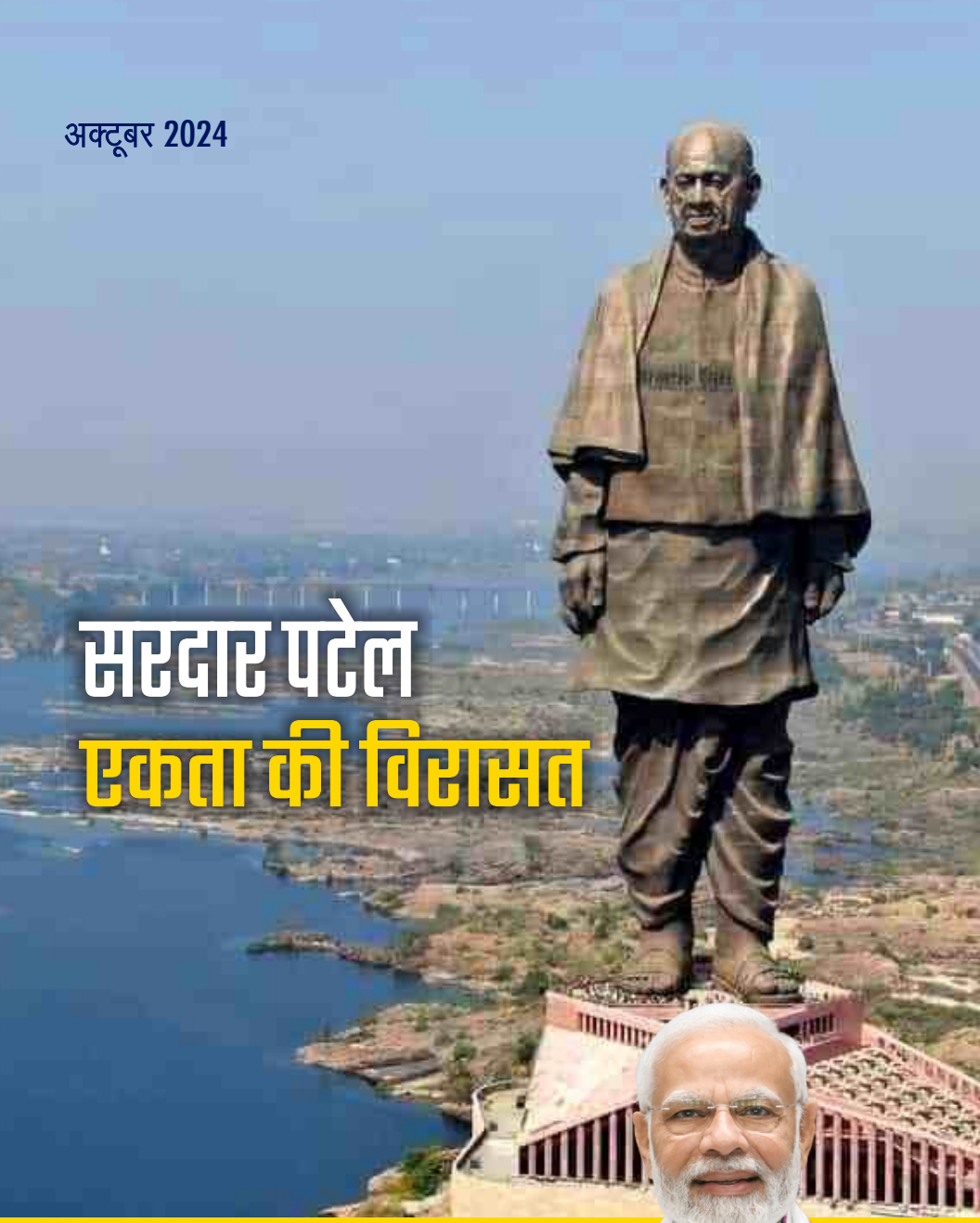

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 मुख्य आलेख

2.1 **एकता की विरासत :** भारत के राज्य एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका 16
2.2 **कलम, स्वर और वाद्य-यंत्र :** भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक 24
2.3 **एवीजीसी-एक्सआर क्षेत्र का उदय :** एनिमेशन के माध्यम से भारत के विकास को गति 38
2.4 **सशक्त डिजिटल इंडिया :** सुरक्षित भविष्य के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा 56
2.5 **विरासत के खेल के मैदान :** भारत के स्वदेशी खेलों की खोज 66

03 संक्षेप में

3.1 **एकता के लिए दौड़ :** प्रगति और राष्ट्रीय गौरव के लिए शपथ 20
3.2 **भगवान बिरसा मुंडा :** साधारण जनजातीय बालक से इंक़लाबी हीरो बनने का सफ़र 28
3.3 **उद्देश्य के लिए कैनवास :** आह्वान के रूप में कला 32
3.4 **संस्कृति के संरक्षक :** भारत की विरासत को संरक्षित करने वाले कलाकार 34
3.5 **अंतरराष्ट्रीय आवाजें :** भारतीय कला और संस्कृति को संरक्षित करने वाली 36
3.6 **अंतरराष्ट्रीय एनिमेशन दिवस :** भारत में एनिमेशन की कला और विरासत का सम्मान 42
3.7 **मेस :** चेरेनकोव के प्रमुख वायुमंडलीय प्रयोग 50
3.8 **डिजिटल आत्मरक्षा :** साइबर सुरक्षा के बारे में आपको क्या जानना चाहिए 60
3.9 फिटनेस और तंदुरुस्ती के ज़रिए एकजुट और स्वस्थ भारत का निर्माण 70

04 लेख/साक्षात्कार

4.1 सरदार वल्लभभाई पटेल व्यावहारिक दार्शनिक - डॉ. हिंदोल सेनगुप्ता 22
4.2 कला को नया स्वरूप देता संग्रहालय - डॉ. संजीव किशोर गौतम 30
4.3 विश्व पटल पर भारतीय एनिमेशन उद्योग - पी. जयकुमार 44
4.4 भारत में गेमिंग सेक्टर - तीर्थ हिरेन मेहता 48
4.5 लद्दाख में एशिया का सबसे बड़ा इमेजिंग टेलीस्कोप - डॉ. अजीत कुमार मोहंती 52
4.6 सामरिक शक्ति रक्षा निर्यात में भारत का बढ़ता प्रभाव -अजय कुमार 54
4.7 डिजिटल अरेस्ट स्कैम और इंटरनेट पर सुरक्षित कैसे रहें - राजेश कुमार 62

05 प्रतिक्रियाएँ 73

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

'मन की बात' में आप सबका स्वागत है। अगर आप मुझसे पूछें कि मेरे जीवन के सबसे यादगार पल क्या रहे, तो कितने ही वाकये याद आते हैं, लेकिन इसमें भी **एक पल ऐसा है जो बहुत खास है वो पल था, जब पिछले साल 15 नवम्बर को मैं भगवान बिरसा मुंडा की जन्मजयंती पर उनकी जन्मस्थली झारखंड के उलिहातू गाँव गया था।** इस यात्रा का मुझ पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। **मैं देश का पहला प्रधानमंत्री हूँ, जिसे इस पवित्र भूमि की मिट्टी को अपने मस्तक से लगाने का सौभाग्य मिला।** उस क्षण मुझे न सिर्फ स्वतंत्रता संग्राम की शक्ति महसूस हुई, बल्कि इस धरती की शक्ति से जुड़ने का भी अवसर मिला। मुझे ये एहसास हुआ कि कैसे एक संकल्प को पूरा करने का साहस देश के करोड़ों लोगों का भाग्य बदल सकता है।

साथियो, भारत में हर युग में कुछ चुनौतियाँ आईं और हर युग में ऐसे असाधारण भारतवासी जन्मे, जिन्होंने इन चुनौतियों का सामना किया। आज की 'मन की बात' में मैं साहस और दूरदृष्टि रखने वाले ऐसे ही दो महानायकों की चर्चा करूँगा। इनकी 150वीं जन्म जयंती को देश ने मनाने का निश्चय किया है। **31 अक्टूबर से सरदार पटेल का 150वीं**

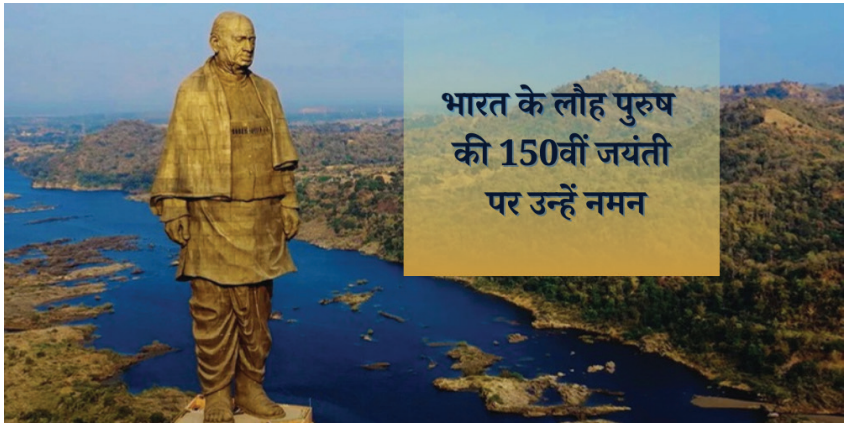

जन्म जयंती का वर्ष शुरू होगा। इसके बाद 15 नवम्बर से भगवान बिरसा मुंडा का 150वाँ जन्म जयंती वर्ष शुरू होगा। इन दोनों महापुरुष ने अलग-अलग चुनौतियाँ देखी, लेकिन दोनों का vision एक था 'देश की एकता'।

साथियो, बीते वर्षों में देश ने ऐसे महान नायक-नायिकाओं की जन्म जयंतियों को नई ऊर्जा से मनाकर, नई पीढ़ी को नई प्रेरणा दी है। आपको याद होगा, जब हमने महात्मा गाँधीजी की 150वीं जन्म जयंती मनाई थी तो कितना कुछ खास हुआ था। New York के Times Square से Africa के छोटे से गाँव तक, विश्व के लोगों ने भारत के सत्य और अहिंसा के सन्देश को समझा,

उसे फिर से जाना, उसे जिया। नौजवानों से बुज़ुर्गों तक, भारतीयों से विदेशियों तक, हर किसी ने गाँधीजी के उपदेशों को नए सन्दर्भ में समझा, नई वैश्विक परिस्थितियों में उन्हें जाना। जब हमने स्वामी विवेकानंदजी की 150वीं जन्म जयंती मनाई तो देश के नौजवानों ने भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक शक्ति को नई परिभाषाओं में समझा। इन योजनाओं ने हमें ये एहसास दिलाया कि हमारे महापुरुष अतीत में खो नहीं जाते, बल्कि उनका जीवन हमारे वर्तमान को भविष्य का रास्ता दिखाता है।

साथियो, सरकार ने भले ही इन महान विभूतियों की 150वीं जन्म जयंती को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का निर्णय लिया है, लेकिन आपकी सहभागिता ही इस अभियान में प्राण भरेगी, इसे जीवंत बनाएगी। मैं आप सभी से आग्रह करूँगा कि आप इस अभियान का हिस्सा बनें। **लौह पुरुष सरदार पटेल से जुड़े अपने विचार और कार्य #Sardar150 के साथ साझा करें और धरती-आबा बिरसा मुंडा की प्रेरणाओं को #BirsaMunda150 के**

साथ दुनिया के सामने लाएँ। आइए, एक साथ मिलकर इस उत्सव को भारत की अनेकता में एकता का उत्सव बनाएँ, इसे विरासत से विकास का उत्सव बनाएँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपको वो दिन याद ज़रूर होंगे जब 'छोटा भीम' टीवी पर आना शुरू हुआ था। बच्चे तो इसे कभी भूल नहीं सकते, कितना excitement था 'छोटा भीम' को लेकर। आपको हैरानी होगी कि आज 'ढोलकपुर का ढोल', सिर्फ **भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देश के बच्चों को भी खूब attract करता है। इसी तरह हमारे दूसरे animated serials, 'कृष्णा', 'हनुमान', 'मोटू-पतलू' के चाहने वाले भी दुनियाभर में हैं।** भारत के animation characters यहाँ की animation movies, अपने content और creativity की वजह से दुनिया-भर में पसंद की जा रही हैं। आपने देखा होगा कि Smartphone से लेकर सिनेमा screen तक, gaming console से लेकर virtual reality तक animation हर जगह मौजूद है। **Animation की दुनिया में भारत नई क्रांति करने की राह पर है। भारत के Gaming Space का भी तेज़ी से विस्तार हो रहा है।** Indian

पिक्सल से पॉसिबिलिटी तक

एनीमेशन क्षेत्र में एक नई लहर का नेतृत्व करता भारत

games भी इन दिनों दुनिया-भर में popular हो रहे हैं। कुछ महीने पहले मैंने भारत के leading gamers के साथ मुलाकात की थी, तब मुझे Indian games की amazing creativity और quality को जानने-समझने का मौका मिला था। वाकई देश में creative energy की एक लहर चल रही है। **Animation की दुनिया में 'Made in India' और 'Made by Indians' छाया हुआ है। आपको ये जानकर खुशी होगी कि आज भारत के talent विदेशी productions का भी अहम हिस्सा बन रहे हैं।** अभी वाली Spider-Man हो या Transformers, इन दोनों movies में हरिनारायण राजीव के contribution को लोगों ने खूब सराहा है। भारत के Animation studios Disney और Warner Brothers जैसी दुनिया के जाने-माने production companies के साथ काम कर रहे हैं।

साथियो, आज हमारे युवा Original Indian Content, जिसमें हमारी संस्कृति की झलक होती है, वो तैयार कर रहे हैं। इन्हें दुनिया-भर में देखा जा रहा है। Animation sector आज एक ऐसी industry का रूप ले चुका है कि जो दूसरी industries को ताकत दे रहा है, जैसे इन दिनों VR Tourism बहुत famous हो रहा है। आप virtual tour के माध्यम से अजंता की गुफाओं को देख सकते हैं, कोणार्क मन्दिर के corridor में टहल सकते हैं, या फिर वाराणसी के घाटों का आनंद ले सकते हैं। ये सभी VR Animation भारत के creators ने तैयार किए हैं। VR के माध्यम से इन जगहों को देखने के बाद कई लोग वास्तविकता में इन पर्यटन स्थलों का दौरा करना चाहते हैं, यानी tourist destination का virtual tour लोगों के मन में जिज्ञासा पैदा करने का माध्यम बन गया है। **आज इस sector में animators के साथ ही story tellers, writers, voice-over experts, musicians, game developers, VR और AR experts उनकी भी माँग लगातार बढ़ती जा रही है। इसलिए मैं भारत के युवाओं से कहूँगा– अपनी creativity को विस्तार दें।** क्या पता दुनिया का अगला super hit animation आपके computer से निकले! अगला viral game आपका creation हो सकता है! Educational animations में आपका innovation बड़ी सफलता हासिल कर सकता है। इसी 28 अक्टूबर को यानी कल 'World Animation Day' भी मनाया जाएगा। आइए, हम भारत को global animation power house बनाने का संकल्प लें।

मेरे प्यारे देशवासियो, स्वामी विवेकानंद ने एक बार सफलता का मंत्र दिया था, उनका मंत्र था– 'कोई एक idea लीजिए, उस एक idea को अपनी ज़िन्दगी बनाइए, उसे सोचिए, उसका सपना देखिए, उसे जीना शुरू करिए।' **आज आत्मनिर्भर भारत अभियान भी सफलता के इसी मंत्र पर चल रहा है। ये अभियान हमारी सामूहिक चेतना का हिस्सा बन गया है।** लगातार, पग-पग पर हमारी प्रेरणा बन गया है। आत्मनिर्भरता हमारी policy ही नहीं, हमारा passion बन गया है। बहुत साल नहीं हुए, सिर्फ 10 साल पहले की बात है, तब अगर कोई कहता था कि किसी complex technology को भारत में विकसित करना है तो कई लोगों को विश्वास नहीं होता था, तो कई उपहास उड़ाते थे, लेकिन आज वही लोग, देश की सफलता को देखकर अचम्भे में रहते हैं। आत्मनिर्भर हो रहा भारत, हर sector में कमाल कर रहा है। आप सोचिए, एक जमाने में mobile phone import करने वाला भारत आज दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा manufacturer बन गया है। **कभी दुनिया में सबसे ज़्यादा defence equipment खरीदने वाला भारत आज 85 देशों को export भी कर रहा है।** Space technology में भारत आज चंद्रमा के South Pole पर पहुँचने वाला पहला देश बना है और एक बात तो मुझे सबसे ज़्यादा अच्छी लगती है, वो ये है कि आत्मनिर्भरता का ये अभियान अब सिर्फ सरकारी अभियान नहीं है, अब आत्मनिर्भर भारत अभियान एक जन अभियान बन रहा है– हर क्षेत्र में उपलब्धियाँ हासिल कर रहे हैं। **जैसे इसी महीने लद्दाख के हानले में हमने एशिया की सबसे बड़ी 'Imaging Telescope MACE' का भी उद्घाटन किया है। ये 4300 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।**

जानते हैं इसकी भी खास बात क्या है! ये 'Made in India' है। सोचिए, जिस स्थान पर minus 30 degree की ठंड पड़ती हो, जहाँ Oxygen तक का अभाव हो, वहाँ हमारे वैज्ञानिकों और Local industry ने वो कर दिखाया है, जो एशिया के किसी देश ने नहीं किया। हानले का telescope भले ही दूर की दुनिया देख रहा हो, लेकिन ये हमें एक चीज़ और भी दिखा रहा है और ये चीज़ है– आत्मनिर्भर भारत का सामर्थ्य।

साथियो, मैं चाहता हूँ आप भी एक काम ज़रूर करें। आत्मनिर्भर होते भारत के ज़्यादा-से-ज़्यादा उदाहरण, ऐसे प्रयासों को share करिए। आपने अपने पड़ोस में कौन सा नया Innovation देखा, किस Local start-up ने आपको सबसे ज़्यादा Impress किया, #AatmanirbharInnovation के साथ social media पर ये जानकारियाँ लिखिए और आत्मनिर्भर भारत का उत्सव मनाइए। त्योहारों के इस मौसम में तो हम सब आत्मनिर्भर भारत के इस अभियान को और मजबूत करते हैं। हम Vocal for Local के मंत्र के साथ अपनी खरीदारी करते हैं। ये नया भारत है, **जहाँ Impossible सिर्फ एक Challenge है, जहाँ Make in India अब Make for the world बन गया है, जहाँ हर नागरिक Innovator है, जहाँ हर challenge एक opportunity है।** हमें न सिर्फ भारत को आत्मनिर्भर बनाना है, बल्कि अपने देश को Innovation के global powerhouse के रूप में

मजबूत भी करना है।

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं आपको एक audio सुनाता हूँ

ये audio सिर्फ जानकारी के लिए नहीं है, ये कोई मनोरंजन वाला audio नहीं है, एक गहरी चिंता को लेकर के audio आया है। आपने अभी जो बातचीत सुनी, वो digital arrest के फरेब की है। ये बातचीत एक पीड़ित और fraud करने वाले के बीच हुई है। **Digital arrest के fraud में phone करने वाले, कभी पुलिस, कभी C.B.I, कभी Narcotics, कभी R.B.I, ऐसे भाँति-भाँति के label लगाकर बनावटी अधिकारी बनकर बात करते हैं और बड़े confidence के साथ करते हैं।** मुझे 'मन की बात' के बहुत से श्रोताओं ने कहा कि इसकी चर्चा जरूर करनी चाहिए। आइए, मैं आपको बताता हूँ, ये fraud करने वाली गैंग काम कैसे करती है, ये खतरनाक खेल क्या है ? **आपको भी समझना बहुत जरूरी है और औरों को भी समझना उतना ही आवश्यक है।**

पहला दाँव– आपकी व्यक्तिगत जानकारी, वो सब जुटा करके रखते हैं, "आप पिछले महीने गोवा गए थे, है ना ? आपकी बेटी दिल्ली में पढ़ती है, है ना?" वे आपके बारे में इतनी जानकारी जुटाकर रखते हैं कि आप दंग रह जाएँगे। **दूसरा दाँव– भय का माहौल पैदा करो,** वर्दी, सरकारी दफ्तर का set-up, कानूनी धाराएँ, वो आपको इतना डरा देंगे phone पर बातों-बातों में आप सोच भी नहीं पाएँगे और फिर उनका तीसरा दाँव, शुरू होता है, **तीसरा दाँव– समय का दबाव,** 'अभी फैसला करना होगा वर्ना आपको गिरफ्तार करना पड़ेगा"– ये लोग पीड़ित पर इतना मनोवैज्ञानिक दबाव बना देते हैं कि वो सहम जाता है। **Digital arrest के शिकार होने वालों में हर वर्ग, हर उम्र के लोग हैं।** लोगों ने डर की वजह से अपनी मेहनत से कमाए हुए लाखों रुपए गवाँ दिए हैं। कभी भी आपको इस तरह का कोई call आए तो आपको डरना नहीं है। आप को पता होना चाहिए

कोई भी जाँच agency, Phone call या Video Call पर इस तरह पूछताछ कभी भी नहीं करती। **मैं आपको Digital सुरक्षा के तीन चरण बताता हूँ। ये तीन चरण हैं– 'रुको-सोचो-Action लो'।** Call आते ही, 'रुको' - घबराएँ नहीं, शांत रहें, जल्दबाजी में कोई कदम न उठाएँ, किसी को अपनी व्यक्तिगत जानकारी न दें, **सम्भव हो तो screenshot लें और Recording ज़रूर करें।**

इसके बाद आता है, दूसरा चरण, पहला चरण था 'रुको', दूसरा चरण है 'सोचो'। कोई भी सरकारी Agency Phone पर ऐसे धमकी नहीं देती, न ही Video call पर पूछताछ करती है, न ही ऐसे पैसे की माँग करती है– अगर डर लगे तो समझिए कुछ गड़बड़ है और पहला चरण, दूसरा चरण और अब मैं कहता हूँ तीसरा चरण। पहले चरण में मैंने कहा– 'रुको', दूसरे चरण में मैंने कहा– 'सोचो' और तीसरा चरण कहता हूँ– 'एक्शन लो'।

राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 डायल करें, cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें, परिवार और पुलिस को सूचित करें, सबूत सुरक्षित रखें। 'रुको', बाद में 'सोचो' और फिर 'एक्शन' लो, ये तीन चरण आपकी डिजिटल सुरक्षा का रक्षक बनेंगे।

साथियो, मैं फिर कहूँगा digital arrest जैसी कोई व्यवस्था कानून में नहीं है, ये सिर्फ fraud है, फरेब है, झूठ है, बदमाशों का गिरोह है और जो लोग ऐसा कर रहे हैं, वो समाज के दुश्मन हैं। digital arrest के नाम पर जो फरेब चल रहा है, उससे निपटने के लिए **तमाम जाँच एजेंसियाँ, राज्य सरकारों के साथ मिलकर काम कर रही हैं।**

इन एजेंसियों में तालमेल बनाने के लिए National Cyber Co-ordination Centre की स्थापना की गई है। एजेंसियों की तरफ से ऐसे fraud करने वाली हजारों video calling ID को block किया गया है। लाखों sim card, mobile phone और bank accounts को भी block किया गया है। एजेंसियाँ अपना काम कर रही हैं, लेकिन digital arrest के नाम पर हो रहे scam से बचने के लिए बहुत ज़रूरी है– हर किसी की जागरूकता, हर नागरिक की जागरूकता। जो लोग भी इस तरह के cyber fraud का शिकार होते हैं, उन्हें ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को इसके बारे में बताना चाहिए। आप जागरूकता के लिए #SafeDigitalIndia का प्रयोग कर सकते हैं। **मैं स्कूलों और कॉलेजों को भी कहूँगा कि cyber scam के खिलाफ मुहिम में छात्रों को भी जोड़ें।** समाज में सबके प्रयासों से ही हम इस चुनौती का मुकाबला कर सकते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे बहुत सारे स्कूली बच्चे calligraphy यानी सुलेख में काफी दिलचस्पी रखते हैं। इसके जरिए हमारी लिखावट साफ, सुंदर और आकर्षक बनी रहती है। आज जम्मू-कश्मीर में इसका उपयोग local culture को लोकप्रिय बनाने के लिए किया जा रहा है। यहाँ के अनंतनाग की फ़िरदौसा बशीर जी उनको calligraphy में महारत हासिल है, इसके जरिए वे स्थानीय संस्कृति के कई पहलुओं को सामने ला रही हैं। फ़िरदौसा जी की calligraphy ने स्थानीय लोगों, विशेषकर युवाओं को अपनी ओर आकर्षित किया है। ऐसा ही एक प्रयास उधमपुर के गोरीनाथ जी भी कर रहे हैं। एक सदी से भी अधिक पुरानी सारंगी के जरिए वे डोगरा संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों को सहेजने में जुटे हैं। सारंगी की धुनों के साथ वे अपनी संस्कृति से जुड़ी प्राचीन कहानियाँ और ऐतिहासिक घटनाओं को दिलचस्प तरीके से बताते हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में भी आपको ऐसे कई असाधारण लोग मिल जाएँगे, जो सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए आगे आए हैं। डी. वैकुंठम करीब 50 साल से चेरियाल फोक आर्ट (Folk Art) को लोकप्रिय बनाने में जुटे हुए हैं। तेलंगाना

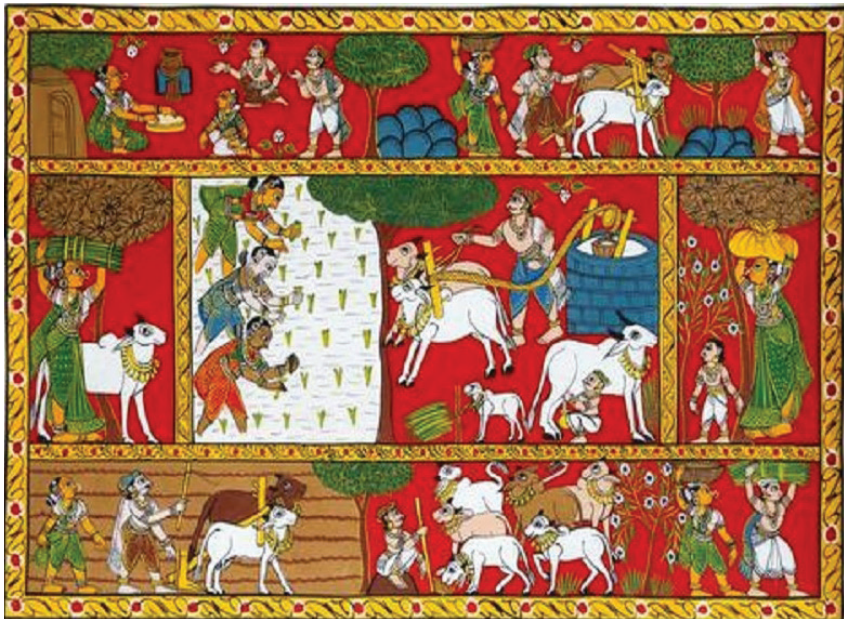

से जुड़ी इस कला को आगे बढ़ाने का उनका यह प्रयास अद्भुत है। चेरियाल पेंटिंग्स (Paintings) को तैयार करने की प्रक्रिया बहुत ही unique है। ये एक scroll के स्वरूप में 'कहानियों' को सामने लाती है। इसमें हमारी History और Mythology की पूरी झलक मिलती है। छत्तीसगढ़ में नारायणपुर के बुटलूराम माथरा जी अबूझमाड़िया जनजाति की लोक कला को संरक्षित करने में जुटे हुए हैं। पिछले चार दशकों से वे अपने इस mission में लगे हुए हैं। उनकी ये कला 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' और 'स्वच्छ भारत' जैसे अभियान से लोगों को जोड़ने में भी बहुत कारगर रही है।

साथियो, अभी हम बात कर रहे थे कैसे कश्मीर की वादियों से लेकर छत्तीसगढ़ के जंगलों तक हमारी कला और संस्कृति नए-नए रंग बिखेर रही है, लेकिन यह बात यहीं खत्म नहीं होती। हमारी इन कलाओं की खुशबू दूर-दूर तक फैल रही है। **दुनिया के अलग-अलग देशों में लोग भारतीय कला और संस्कृति से मंत्रमुग्ध हो रहे हैं।**

जब मैं आपको उधमपुर में गूँजती सारंगी की बात बता रहा था, तब मुझे याद आया कि कैसे हजारों मील दूर रूस के शहर याकूत्स्क में भी भारतीय कला की मधुर धुन गूँज रही है। कल्पना कीजिए, सर्दी का एक-आध दिन, minus 65 डिग्री तापमान, चारों तरफ बर्फ की सफेद चादर और वहाँ एक theatre में दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देख रहे हैं– कालिदास की 'अभिज्ञान शाकुंतलम'। क्या आप सोच सकते हैं दुनिया के सबसे ठंडे शहर याकूत्स्क में भारतीय साहित्य की गर्मजोशी ! ये कल्पना नहीं, सच है,

हम सबको गर्व और आनंद से भर देने वाला सच।

साथियो, कुछ हफ्ते पहले मैं Laos भी गया था। वो नवरात्रि का समय था और वहाँ मैंने कुछ अद्भुत देखा। स्थानीय कलाकार 'फलक फलम' प्रस्तुत कर रहे थे – 'Laos की रामायण'। उनकी आँखों में वही भक्ति, उनके स्वर में वही समर्पण, जो रामायण के प्रति हमारे मन में है। इसी तरह कुवैत में श्री अब्दुल्ला अल-बारून ने रामायण और महाभारत का अरबी में अनुवाद किया है। यह कार्य मात्र अनुवाद नहीं, बल्कि दो महान संस्कृतियों के बीच एक सेतु है। उनका यह प्रयास अरब जगत में भारतीय साहित्य की नई समझ विकसित कर रहा है। पेरू से एक और प्रेरक उदाहरण है– एरलिंदा गार्सिआ (Erlinda Garcia) वहाँ के युवाओं को भरतनाट्यम सिखा रही हैं और मारिया वालदेस (Maria Valdez) ओडिसी नृत्य का प्रशिक्षण दे रही हैं। इन कलाओं से प्रभावित होकर दक्षिण अमरीका के कई देशों में 'भारतीय शास्त्रीय नृत्य' की धूम मची हुई है।

साथियो, विदेशी धरती पर भारत के ये उदाहरण दर्शाते हैं कि भारतीय संस्कृति की शक्ति कितनी अद्भुत है। ये लगातार विश्व को अपनी ओर आकर्षित कर रही है।

"जहाँ-जहाँ कला है, वहाँ-वहाँ भारत है"

"जहाँ-जहाँ संस्कृति है, वहाँ-वहाँ भारत है"

आज दुनिया भर के लोग भारत को जानना चाहते हैं, भारत के लोगों को जानना चाहते हैं। इसलिए आप सभी से एक अनुरोध भी है, अपने आस-पास ऐसी सांस्कृतिक पहल को #CulturalBridges के साथ साझा कीजिए। 'मन की बात' में हम ऐसे उदाहरण पर आगे भी चर्चा करेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, देश के बड़े हिस्से में ठंड का मौसम शुरू हो गया है, लेकिन Fitness का passion, Fit India की spirit - इसे किसी भी मौसम से फर्क नहीं पड़ता। जिसे Fit रहने की आदत होती है, वो सर्दी, गर्मी, बरसात

कुछ भी नहीं देखता। **मुझे खुशी है कि भारत में अब लोग Fitness को लेकर बहुत ज़्यादा जागरूक हो रहे हैं।** आप भी देख रहे होंगे कि आपके आस-पास के पार्कों में लोगों की संख्या बढ़ रही है। पार्क में टहलते बुजुर्गों, नौजवानों, और योग करते परिवारों को देखकर मुझे अच्छा लगता है। मुझे याद है, जब मैं योग दिवस पर श्रीनगर में था, बारिश के बावजूद भी कितने ही लोग 'योग' के लिए जुटे थे। अभी कुछ दिन पहले श्रीनगर में जो marathon हुई, उसमें भी मुझे fit रहने का यही उत्साह दिखाई दिया। **Fit India की ये भावना अब एक mass movement बन रही है।**

साथियो, मुझे ये देखकर भी अच्छा लगता है कि हमारे schools, बच्चों की fitness पर अब और ज़्यादा ध्यान दे रहे हैं। Fit India School Hours भी एक अनोखी पहल है। Schools अपने first period का इस्तेमाल अलग-अलग fitness activities के लिए कर रहे हैं।

कितने ही स्कूलों में किसी दिन बच्चों को योग करवाया जाता है, कभी किसी दिन aerobics के session होते हैं, तो **एक दिन sports skills पर काम किया जाता है, किसी दिन खो-खो और कबड्डी जैसे पारम्परिक खेल खिलाए जा रहे हैं और इसका असर भी बहुत शानदार है।** Attendance अच्छी हो रही है, बच्चों का concentration बढ़ रहा है और बच्चों को मजा भी आ रहा है।

साथियो, मैं Wellness की ये ऊर्जा हर जगह देख रहा हूँ। 'मन की बात' के भी बहुत से श्रोताओं ने मुझे अपने अनुभव भेजे हैं। कुछ लोग तो बहुत ही रोचक प्रयोग कर रहे हैं। जैसे एक उदाहरण है, Family Fitness Hour का, यानी एक परिवार, हर weekend एक घंटा Family Fitness Activity के लिए दे रहा है। एक और उदाहरण Indigenous Games Revival का है, यानी कुछ परिवार अपने बच्चों को traditional games सिखा रहे हैं, खिला रहे हैं। आप भी अपनी Fitness Routine के experience #fitIndia के नाम Social Media पर जरूर share कीजिए। मैं देश के लोगों को एक

ज़रूरी जानकारी भी देना चाहता हूँ। इस बार 31 अक्टूबर को सरदार पटेल जी की जयंती के दिन ही दीपावली का पर्व भी है। हम हर साल 31 अक्टूबर को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' पर 'Run for Unity' का आयोजन करते हैं। दीपावली की वजह से इस बार 29 अक्टूबर यानी मंगलवार को 'Run for Unity' का आयोजन किया जाएगा। मेरा आग्रह है, ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में इसमें हिस्सा लीजिए– देश की एकता के मंत्र के साथ ही Fitness के मंत्र को भी हर तरफ फैलाइए।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में इस बार इतना ही। आप अपने Feedback जरूर भेजते रहें। ये त्योहारों का समय है। 'मन की बात' के श्रोताओं को धनतेरस, दीवाली, छठ पूजा, गुरु नानक जयंती और सभी पर्वों की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। आप सभी पूरे उत्साह के साथ त्योहार मनाएँ– Vocal for Local का मंत्र याद रखें, कोशिश करें कि त्योहारों के दौरान आपके घर में स्थानीय दुकानदारों से खरीदा गया सामान ज़रूर आए। एक बार फिर आप सभी को आने वाले पर्वों की बहुत-बहुत बधाई। धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

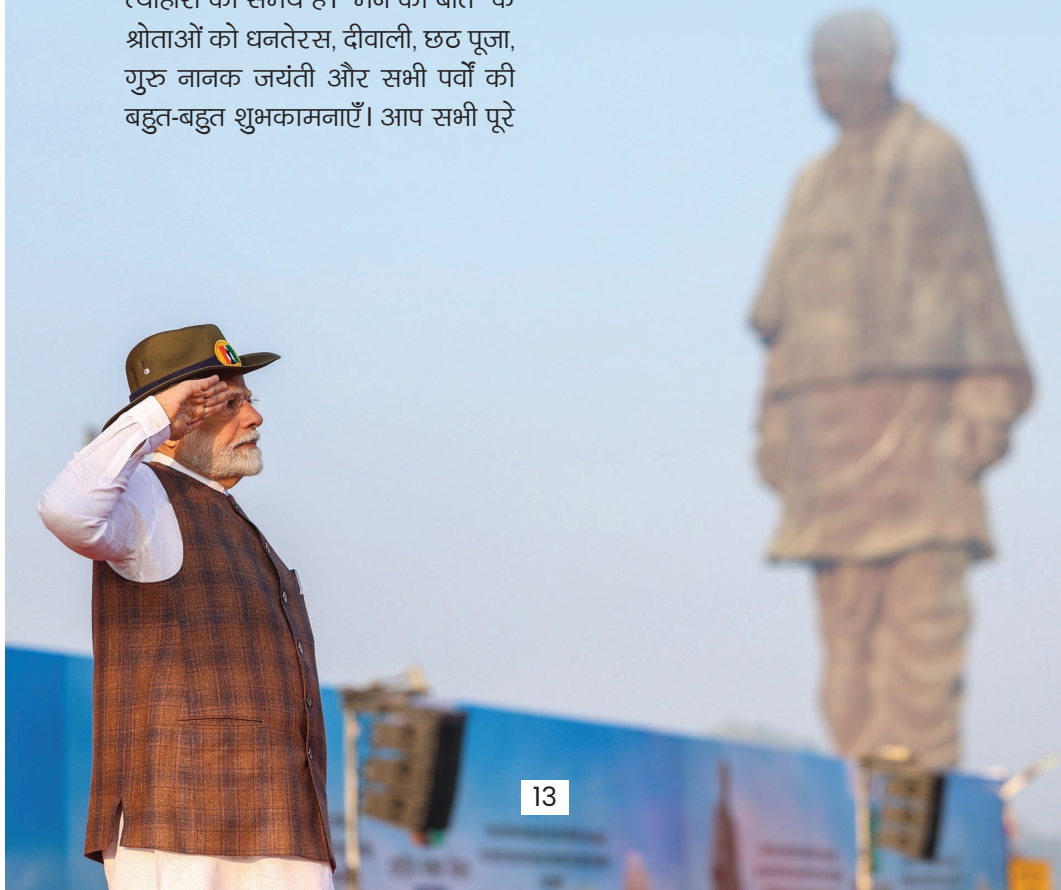

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

एकता की विरासत

भारत के राज्य एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका

“31 अक्टूबर से सरदार पटेल की 150वीं जयंती वर्ष की शुरुआत होगी। उसके बाद 15 नवम्बर से भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती वर्ष की शुरुआत होगी। इन दोनों महान आत्माओं के सामने अलग-अलग चुनौतियाँ थीं, लेकिन उनका सपना एक ही था, देश की एकता का।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

“पटेल का मूल दर्शन भारत के सर्वोत्तम हितों को प्राथमिक फिल्टर के रूप में रखना था जिसके माध्यम से किसी भी घटना या निर्णय का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। वह ‘भारत-प्रथम’ सोच के अग्रणी थे।”

– डॉ. हिंदोल सेनगुप्ता
इतिहासकार, अंतरराष्ट्रीय सम्बंध के प्रोफेसर, ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी

भारत की स्वतंत्रता के बाद इसकी अखंडता में सरदार वल्लभभाई पटेल के महत्त्वपूर्ण योगदान की व्यापक रूप से प्रशंसा की जाती है। उनकी दूरदर्शिता और रणनीतिक नेतृत्व ने देश के विविध क्षेत्रों को एक सुसंगठित राष्ट्र में एकजुट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसलिए उन्हें आधुनिक भारत के ‘लौह पुरुष’ और ‘राजनेता-प्रशासक’ की उपाधियाँ दी जाती हैं। उनकी विनम्रता, प्रेरक कौशल, लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता और दृढ़ नेतृत्व ने रियासतों को भारतीय संघ में सफलतापूर्वक शामिल किया और उनके शासकों की सम्प्रभुता को बनाए रखते हुए उन्हें नए राष्ट्र में एकीकृत किया।

स्वतंत्रता-पूर्व भारत का संदर्भ और एकीकरण की आवश्यकता : भारत की स्वतंत्रता के समय, देश में दो प्रकार के प्रांत थे : ब्रिटिश-नियंत्रित प्रांत और रियासतें। अंग्रेज़ों ने 17 प्रांतों पर सीधे शासन किया, जबकि रियासतें, जो भारत के लगभग 40 प्रतिशत भूभाग में थीं और इनमें आबादी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बसता था, उन्हें नाममात्र स्वतंत्रता हासिल थी और इन पर ब्रिटिश प्रभाव की अलग-अलग प्रशासनिक नीतियाँ थी। अंग्रेजों ने इन राज्यों को प्रबंधित करने के लिए समय के साथ अलग-अलग नीतियों को नियोजित किया, जो इस प्रकार विकसित हुईं:

1. रिंग-फेंस पॉलिसी (1757-1818) : शुरुआत में अंग्रेज़ों ने बाहरी खतरों से बचाव के लिए बंगाल जैसे प्रमुख क्षेत्रों के चारों ओर एक रक्षात्मक परिधि स्थापित करके भारत में अपनी सीमित पकड़ को बनाएँ रखने की कोशिश की।

2. अधीनस्थ अलगाव की नीति (1818-1857) : जैसे-जैसे ब्रिटिश शक्ति बढ़ी, उन्होंने अधिक आक्रामक रणनीति अपनाई, ‘सहायक गठबंधन’ जैसी संधियों का उपयोग करके रियासतों को ब्रिटिश नियंत्रण में लाने के लिए उन्हें ब्रिटिश सैनिकों की मेजबानी करने और ब्रिटिश नीतियों को स्वीकार करने की आवश्यकता थी।

3. अधीनस्थ संघ की नीति (1857-1935) : 1857 के विद्रोह के बाद, जो रियासतें अंग्रेजों के प्रति वफादार रहीं और उन्होंने जब तक ब्रिटिश वर्चस्व को स्वीकार किया, उन्हें अधिक स्वायत्तता से पुरस्कृत किया गया।

4. समान संघ की नीति (1935-1947) : ब्रिटिश शासन के अंतिम चरण में रियासतों को संघीय भारत में शामिल होने का अवसर दिया गया था, लेकिन यह योजना विफल हो गई, क्योंकि इसके लिए कम से कम आधी रियासतों की भागीदारी की आवश्यकता थी और यह शर्त पूरी नहीं हो पाई।

रियासतों को एकीकृत करने की आवश्यकता : इन राज्यों का भारत में विलय कई कारणों से महत्त्वपूर्ण था। कई रियासतों पर ऐसे शासकों का शासन था जो अपने सिद्धांतों से कटे हुए थे, जिसके कारण खराब शासन, प्रतिनिधि संस्थानों की कमी और सामाजिक अशांति थी। इसके अतिरिक्त उनके भौगोलिक विखंडन ने आर्थिक विकास, बुनियादी ढाँचे के विकास और राष्ट्रीय सामंजस्य में बाधा

उत्पन्न की। विभाजन ने सुरक्षा जोखिम भी पैदा किए, क्योंकि राज्य राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों के लिए आधार के रूप में काम कर सकते थे। 1947 के भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम के तहत ब्रिटिश सर्वोच्चता की समाप्ति ने इन राज्यों को भारत में शामिल होने या पाकिस्तान में शामिल होने या स्वतंत्र रहने का विकल्प दिया। बाद के दो विकल्प पटेल के लिए अव्यावहारिक थे, क्योंकि वे भारत की क्षेत्रीय अखंडता और सुरक्षा को खतरे में डाल सकते थे।

एकीकरण के लिए सरदार पटेल की रणनीति : रियासतों के एकीकरण का प्रबंधन करने के लिए पटेल ने वी.पी. मेनन के नेतृत्व में एक समर्पित 'राज्य विभाग' की स्थापना की। उनका दृष्टिकोण मुख्य रूप से अनुनय पर आधारित था। पटेल ने रियासतों के शासकों को यह समझाने के लिए अपने उल्लेखनीय कूटनीतिक कौशल का इस्तेमाल किया कि भारत में शामिल होना उनके सर्वोत्तम हित में है, उन्हें एकीकरण के बाद उनकी व्यक्तिगत सुरक्षा और निरंतर विशेषाधिकारों का आश्वासन दिया। उन्होंने चतुराई, दूरदर्शिता और प्रतिभा के बल पर 562 रियासतों का भारतीय संघ में विलय करवाया।

अधिकांश रियासतें अंततः भारत में शामिल हो गईं, लेकिन कश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद जैसी कुछ रियासतों ने इसका विरोध किया। पटेल ने इन मामलों में कड़ा रुख अपनाया। जूनागढ़, जिसका शासक मुस्लिम था लेकिन वहाँ हिन्दू बहुसंख्यक थे, पटेल ने पाकिस्तान में शामिल होने के वहाँ के नवाब के प्रयास के बाद सैन्य हस्तक्षेप का आदेश दिया। हैदराबाद में निज़ाम ने स्वतंत्र रहने का प्रयास किया, यहाँ तक कि एक निजी मिलिशिया, रजाकारों का गठन किया, जिससे साम्प्रदायिक हिंसा

हुई। पटेल ने सैन्य कार्रवाई के साथ निर्णायक रूप से जवाब दिया, जिससे हैदराबाद का एकीकरण हुआ। हालाँकि पटेल कश्मीर में सीधे तौर पर शामिल नहीं थे, लेकिन उनके कार्यों ने इसके एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

पटेल की विरासत : अखिल भारतीय सेवाओं के निर्माता पटेल की एक और स्थायी विरासत अखिल भारतीय सेवाओं की स्थापना है, जो अनुच्छेद 312 के तहत भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषता है। देश भर में एकसमान प्रशासन सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई यह सेवा भारत की संघीय संरचना के सामने एकता बनाए रखने के लिए आवश्यक थी। नेहरू और विभिन्न राज्य नेताओं सहित कुछ लोगों के विरोध के बावजूद पटेल का मानना था कि भारत की एकजुटता के लिए एक मजबूत, केंद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली महत्त्वपूर्ण थी। अखिल भारतीय सेवाओं, विशेष रूप से भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) ने तब से भारत के शासन को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

21 अप्रैल को सिविल सेवा दिवस पर हम 1947 में आईएएस अधिकारियों के पहले बैच को दिए गए पटेल के ऐतिहासिक सम्बोधन को याद करते हैं, जिसमें उन्होंने उनसे ईमानदारी बनाए रखने, राजनीतिक हस्तक्षेप से दूर रहने और साम्प्रदायिक पूर्वाग्रहों से बचने का आग्रह किया था। उनके शब्द सार्वजनिक सेवा के लोकाचार में गूँजते रहते हैं।

31 अक्टूबर को प्रतिवर्ष मनाए जाने वाले राष्ट्रीय एकता दिवस पर, भारत सरदार पटेल की दूरदर्शिता और नेतृत्व का सम्मान करता है। रियासतों को एकीकृत करने और अखंड भारत की नींव रखने में उनकी भूमिका देश की पहचान के लिए महत्त्वपूर्ण बनी हुई है। हम जब उनके योगदान पर विचार करते हैं, तो हमें एकता, लोकतंत्र और राष्ट्र-निर्माण के मूल्यों की याद आती है, जिनका उन्होंने जीवन भर समर्थन किया।

एकता के लिए दौड़

प्रगति और राष्ट्रीय गौरव के लिए शपथ

31 अक्टूबर, 2024 को 10वें राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में, 29 अक्टूबर, 2024 को नई दिल्ली में 'एकता के लिए दौड़' कार्यक्रम को हरी झंडी दिखाई गई। एकजुटता के आह्वान के रूप में पहली बार 2015 में शुरू की गई, एकता के लिए दौड़ न केवल राष्ट्रीय एकता के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है, बल्कि एक प्रगतिशील, विकसित भारत के दृष्टिकोण को भी दर्शाती है, जो एकजुट और समृद्ध भविष्य की दिशा में काम कर रहा है। देश भर के सरकारी संगठन, संस्थान, स्कूल और कॉलेज सरदार वल्लभभाई पटेल के एकीकृत भारत के दृष्टिकोण का जश्न मनाने के लिए मैराथन का आयोजन करते हैं।

सरदार वल्लभभाई पटेल व्यावहारिक दार्शनिक

डॉ. हिंदोल सेनगुप्ता
इतिहासकार, प्रोफेसर-अंतरराष्ट्रीय सम्बंध, ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी

स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष के राजनीतिक विश्लेषण में एक प्रमुख गुमनाम कड़ी, प्रथम उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल के व्यावहारिक दर्शन की विस्तृत खोज है। सरदार पटेल के व्यावहारिक दर्शन ने कड़ी मेहनत से आधुनिक भारतीय स्वतंत्र राष्ट्र के मानचित्र की कल्पना में रंग भरे थे। इसमें सन्देह की कोई गुँजाइश नहीं है कि सरदार वल्लभभाई पटेल की दृढ़ इच्छाशक्ति के बिना तत्कालीन ब्रिटिश भारत के साथ पाँच सौ से अधिक रियासतों का एकीकरण नहीं हो सकता था या कम-से-कम इतनी आसानी से और अधिकांश क्षेत्रों से अपेक्षाकृत कम टकराव के साथ यह सम्भव नहीं हो सकता था।

सरदार पटेल ने हर मौके पर राजनीतिक और नीतिगत कार्रवाई को निर्धारित करने के लिए भारत के हितों की रक्षा करने वाली व्यावहारिक, यथार्थवादी दृष्टि का इस्तेमाल किया। हैदराबाद के विद्रोही निज़ाम और कट्टर रजाकार का सामना करते हुए उन्होंने जवाहरलाल नेहरू की इच्छा के विरुद्ध विद्रोह को कुचलने और हैदराबाद को भारत संघ में शामिल करने के लिए मेजर जनरल जयंतो नाथ चौधरी के नेतृत्व में सेना भेजने का कठोर निर्णय लिया। पटेल के पास यह देखने की व्यावहारिक दूरदर्शिता थी कि उस समय दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति निज़ाम के नेतृत्व में हैदराबाद का अगर भारत में विलय नहीं हुआ तो भारत के नए स्वतंत्र गणराज्य के लिए साजिश और तनाव का एक सतत स्रोत बना रहेगा। पटेल ने कश्मीर पर पाकिस्तान से होने वाले हमलों की पहली लहर से ही उसकी रक्षा के लिए सेना को वहाँ भेजने सम्बंधी निर्देशों पर हस्ताक्षर किए, जबकि अन्य लोग इस पर झिझक रहे थे। सरदार पटेल कश्मीर मुद्दे के समाधान के लिए उसे संयुक्त राष्ट्र में भेजने के खिलाफ अपनी राय के बारे में मुखर थे। जब राजकोषीय समझौते की बात आई, तो पटेल ने बहुत व्यावहारिक दूरदर्शिता के साथ सलाह दी कि पाकिस्तान के साथ वित्तीय समझौते कश्मीर मुद्दे पर

समाधान के साथ-साथ होने चाहिए, लेकिन उनके कई सहयोगियों ने इसका विरोध किया, जिसके कारण पाकिस्तान को एकतरफा धन सौंप दिया गया और इस प्रकार कश्मीर विवाद की कड़वाहट जारी रही। 1950 की सर्दियों में अपनी मृत्यु से ठीक पहले लिखे गए दो पत्रों में सरदार वल्लभभाई ने उल्लेख किया कि भारत को कई दिशाओं से गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि भारत को माओ और उनके क्रांतिकारियों के साम्राज्यवादी इरादों के बारे में बेखबर नहीं होना चाहिए, न ही कम्युनिस्ट क्रांति के इरादे और महत्त्वाकांक्षा के प्रति अँधेरे में रहना चाहिए। माओ द्वारा तिब्बत पर विजय ने पटेल को उनके किसी भी साथी से बहुत पहले ही यह सिखा दिया था कि इसका असर भारत के दरवाजे तक आएगा। अपनी मृत्यु से पहले पटेल ने भारत को जो भी चेतावनियाँ दी थीं, वे सच साबित हुईं। उनकी सभी आशंकाएँ सही थीं। प्रत्येक मुद्दा भारत के लिए ठीक उसी तरह समस्या बन गया, जैसा उन्होंने भविष्यवाणी की थी। ज़मीनी हकीकत चाहे जो भी हो, किसी भी विचारधारा को आँख मूँदकर अपनाने से पटेल के इन्कार ने उन्हें एक असाधारण व्यावहारिक व्यक्ति बनाया। उनकी वस्तुनिष्ठता और स्वतंत्र विचार की शिक्षाओं से भारत अब भी सीख रहा है। पटेल का मूल दर्शन भारत के सर्वोत्तम हितों को प्राथमिक फिल्टर के रूप में रखना था, जिसके माध्यम से किसी भी घटना या निर्णय का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। वे 'भारत-प्रथम' विचारधारा के अग्रणी थे। वे भले ही एक औपनिवेशिक देश से थे और उन्होंने इंग्लैंड में अध्ययन करने में समय बिताया था, लेकिन वे किसी भी प्रकार की हीन भावना से अप्रभावित थे और भारतीय मूल्यों तथा व्यावहारिक ज्ञान के प्रचारक और प्रसारक थे। पटेल ने समाजवाद के युग में आँख मूँदकर इसे अपनाने से इन्कार कर दिया और देश के विकास और समृद्धि के लिए भारतीय उद्यमों की भूमिका की हिमायत की। उनकी शिक्षाएँ भारत के वर्तमान और भविष्य के लिए बहुत अमूल्य हैं, हालाँकि अभी भी उनका कम अध्ययन किया गया है।

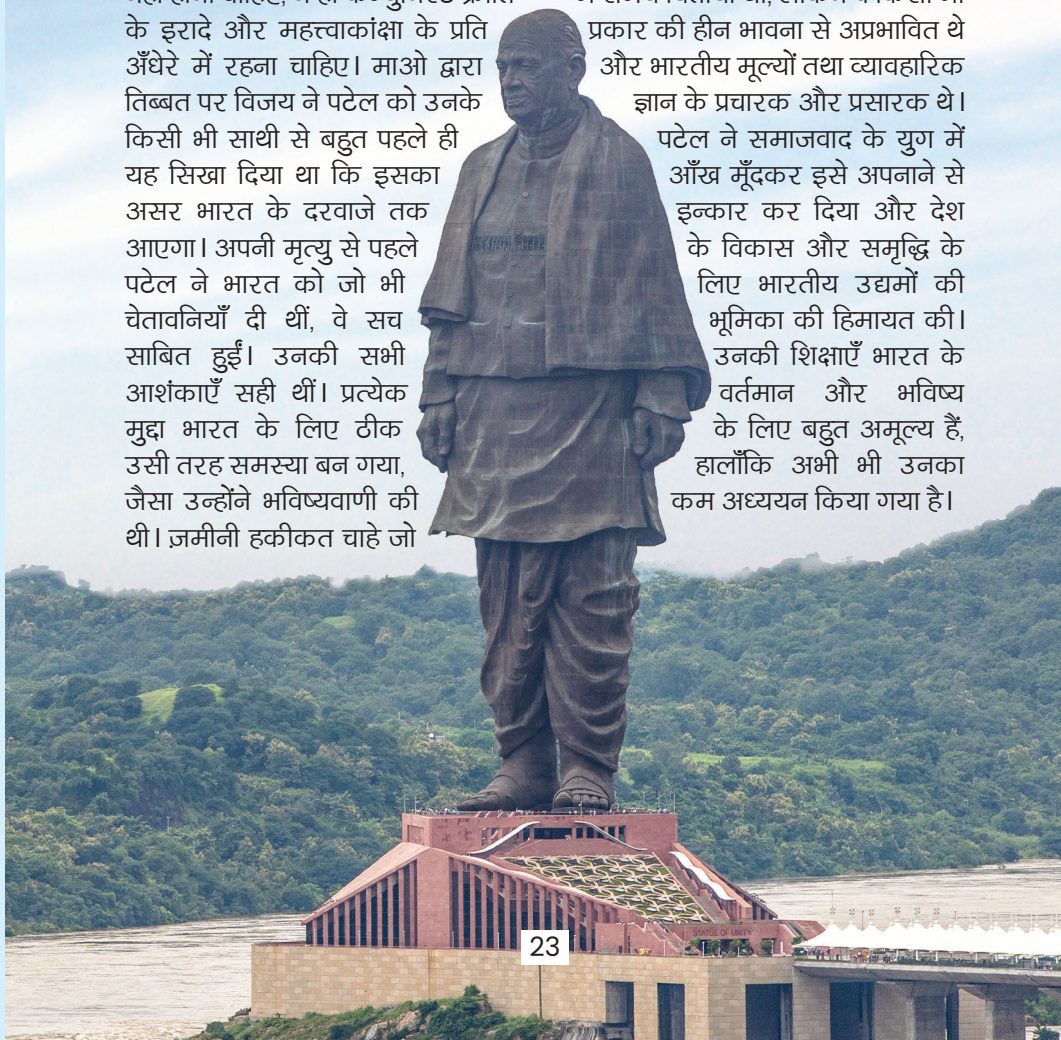

कलम, स्वर और वाद्य-यंत्र

भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक

“साथियो, अभी हम बात कर रहे थे कि कैसे हमारी कला और संस्कृति कश्मीर की घाटियों से लेकर छत्तीसगढ़ के जंगलों तक, अनेकों रंग बिखेर रही है। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। हमारी इन कलाओं की खुशबू दूर-दूर तक फैल रही है। दुनिया के अलग-अलग देशों में लोग भारतीय कला और संस्कृति से मंत्रमुग्ध हो रहे हैं।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

भारत की सांस्कृतिक विरासत एक विशाल महासागर है, जो लोकगीतों की लय, कारीगरों के ब्रश के स्ट्रोक और सदियों पुरानी परम्पराओं से जुड़ी हुई है। इन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्यार से आगे बढ़ाया जाता रहा है। ये कलाएँ केवल शिल्प नहीं हैं, ये इतिहास, आध्यात्मिकता और पहचान के वाहक हैं। आधुनिक समय में कलाकार और कहानीकार इन लोक परम्पराओं को बरकरार रखते हैं, उन्हें नए दर्शकों के अनुरूप बनाते हैं। और उनकी जड़ों का सम्मान करते हैं; उससे जुड़े रहते हैं।

राजस्थान में पाबूजी की फड़ सांस्कृतिक कथाओं को संरक्षित करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली लोक कला का एक शानदार उदाहरण है। भीलवाड़ा क्षेत्र में 700 साल पहले शुरू हुई लोक देवता पाबूजी को समर्पित इस पारम्परिक चित्रकला रूप को एक लम्बे कपड़े पर चित्रित किया जाता है और कहानीकार, वीरता तथा भक्ति की कहानियों को चित्रित करने के लिए इसका उपयोग करते हैं। सदियों से, भीलवाड़ा में जोशी परिवार ने इस कला को जीवंत रखा है, क्षेत्रीय कहानियों को संरक्षित किया है, अन्यथा यह विलुप्त हो सकती हैं।

भारत की सांस्कृतिक विरासत को प्राचीन **तमिल संगम साहित्य** के संरक्षण और दस्तावेजीकरण के माध्यम से भी सुरक्षित रखा गया है। 300 ईसा पूर्व और 300 ई. के बीच उत्पन्न संगम साहित्य में कविता और गद्य शामिल हैं, जो प्राचीन तमिल सभ्यता में प्रेम, युद्ध और दैनिक जीवन जैसे विषयों की जानकारी देते हैं। तिरुवल्लुवर द्वारा थिरुक्कुरल जैसी कृतियाँ अपने कालातीत नैतिक सिद्धांतों और सार्वभौमिक मूल्यों के लिए विशेष रूप से पूजनीय हैं। हाल के दशकों में विद्वानों ने संगम साहित्य का विभिन्न भारतीय और वैश्विक भाषाओं में अनुवाद किया है, ताकि इन कालातीत ग्रंथों को अधिकतम दर्शकों के लिए सुलभ बनाया जा सके। इन प्रयासों ने न केवल प्राचीन तमिलनाडु की भाषा और संस्कृति को संरक्षित किया है, बल्कि तमिल साहित्यिक विरासत के लिए वैश्विक प्रशंसा को भी बढ़ावा दिया है, जिसने भारत से कहीं आगे नैतिक और दार्शनिक रूप से प्रभावित किया है।

माता नी पचेड़ी, गुजरात का एक स्वदेशी कला रूप है, वाघारी समुदाय सदियों से इससे जुड़ा रहा है। इसमें कपड़े पर देवी की कहानियों का चित्रण किया जाता है, जिन्हें अक्सर मन्दिरों या दिव्य स्त्रीत्व के कीर्तिगान वाले त्योहारों में इस्तेमाल किया जाता है। माता नी पचेड़ी पेंटिंग आमतौर पर ब्लॉक-प्रिंटेड या हाथ से पेंट की जाती हैं और प्राकृतिक रंगों में रँगी जाती हैं, प्रत्येक हिस्सा एक कहानी बयान करता है। सूर्य की आकृतियाँ, देवी-देवता, पशु और मवेशी इसके सबसे आम पैटर्न में से हैं। चितारा भारत के उन कुछ समुदायों में से एक हैं जो 400 से अधिक वर्षों से माता नी पचेड़ी

की गुप्त कला को आगे बढ़ा रहे हैं। अप्रैल, 2023 में माता नी पचेड़ी को GI टैग दिया गया। इस पवित्र कला को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में उनके योगदान के लिए चितारों को कई पुरस्कार भी मिले हैं।

बंगाल के बाउल गायक, जो अपने भावपूर्ण संगीत और कविता के लिए जाने जाते हैं, भारत के सांस्कृतिक संरक्षण का एक और अभिन्न अंग हैं। इन गायकों के गीत प्रेम, रहस्यवाद और मानव आत्माओं की यात्रा पर आधारित होते हैं। उनका संगीत भारतीय लोककथाओं से दार्शनिक विचारों और कहानियों को व्यक्त करता है। बंगाल के एक प्रमुख बाउल गायक, फकीर लालोन सैन को अक्सर उनके गीतों में बुने गए ज्ञान के लिए कई आधुनिक बाउल द्वारा संदर्भित किया जाता है। बाउल अपनी सरल, भावपूर्ण धुनों के लिए जाने जाते हैं, जो एकतारा, दोतारा और डुग्गी ड्रम जैसे पारम्परिक वाद्ययंत्रों के साथ बजती हैं। ये वाद्य यंत्र भारत की प्राचीन संगीत विरासत का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं।

भारत के शास्त्रीय नृत्य रूप भी सांस्कृतिक स्मृति के भंडार हैं। कुचिपुड़ी एक ऐसा शास्त्रीय नृत्य रूप है, जिसकी उत्पत्ति 17वीं शताब्दी में आंध्र प्रदेश राज्य में हुई थी। अपनी सुंदर भाव-भंगिमा, जटिल पदचिह्नों और भावपूर्ण कहानी कहने के लिए जाना जाने वाला कुचिपुड़ी एक ऐसा नृत्य है, जो

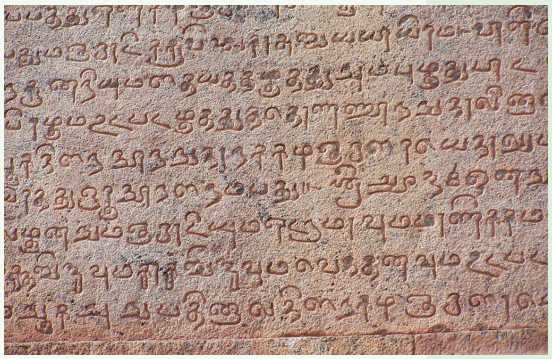

प्राचीन भारत की परम्पराओं, पौराणिक कथाओं और अनुष्ठानों को संरक्षित करता है। ऐतिहासिक रूप से, कुचिपुड़ी को भक्ति के रूप में मन्दिरों में प्रदर्शित किया जाता था। यह नृत्य न केवल आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का साधन था, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठानों को सुदृढ़ करने का भी माध्यम था। 20वीं शताब्दी में यामिनी कृष्णमूर्ति और वेम्पति चिन्ना सत्यम् जैसे पुनरुत्थानवादियों के प्रयासों ने कुचिपुड़ी को उसकी जड़ों से परिचित कराया, मन्दिर-आधारित प्रदर्शनों को पुनर्जीवित किया और नृत्य को एक प्रमुख सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में स्थापित किया।

भारत की लोक कला न केवल अपनी सीमाओं के भीतर रही है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी गूँजती रही है। 20वीं सदी की शुरुआत में आनंद कुमारस्वामी ने विश्व मंच पर भारतीय पारम्परिक कलाओं का समर्थन किया। उनके व्यापक लेखन, जैसे 'शिव का नृत्य' और 'भारत की कला और शिल्प' ने भारतीय कला के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व को उजागर किया। कुमारस्वामी के काम ने पूर्वी और पश्चिमी विचारों को जोड़ा, भारतीय संस्कृति की औपनिवेशिक गलत धारणाओं को चुनौती दी और इसकी कलात्मक परम्पराओं के संरक्षण की हिमायत की।

उनके प्रयास भारतीय विरासत की वैश्विक समझ को निरंतर प्रभावित करने के साथ और विद्वानों, कलाकारों तथा सांस्कृतिक संगठनों को भारत की समृद्ध कलात्मक विरासत को महत्त्व देने और संरक्षित करने के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

भगवान बिरसा मुंडा

साधारण जनजातीय बालक से इंक़लाबी हीरो बनने का सफ़र

01 भगवान बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर, 1875 को झारखंड के राँची ज़िले के उलिहातू गाँव में एक साधारण जनजातीय परिवार में हुआ था।

02 बचपन से ही उन्होंने अंग्रेज़ी शासन और ज़मींदारों द्वारा जनजातीय समाज पर हो रहे अत्याचारों को क़रीब से देखा। इससे उनके भीतर विरोध का भाव पैदा हुआ।

03 मिशनरी स्कूल में पढ़ाई के दौरान बिरसा ने अंग्रेज़ी धर्म और संस्कृति के प्रभाव को महसूस किया। इस अनुभूति ने उनकी अपने समाज के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मदद की।

04 धीरे-धीरे, बिरसा ने जनजातीय समाज को एकजुट करने का प्रयास किया और उन्हें अन्याय के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होने के लिए प्रेरित किया।

05 वे अपने अनुयायियों के बीच 'भगवान बिरसा' के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने एक क्रांतिकारी आंदोलन की नींव रखी, जिसे 'उलगुलान' (महान विद्रोह) कहा गया।

06 यह आंदोलन 1899-1900 के दौरान अंग्रेज़ी सरकार और ज़मींदारों के शोषण के ख़िलाफ़ छेड़ा गया था। इसमें जल, जंगल और ज़मीन पर जनजातीय अधिकारों की माँग उठाई गई।

07 बिरसा ने जनजातीय समाज को संगठित कर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ संघर्ष करने की प्रेरणा दी, जिससे वे जनजातीय समाज के महानायक बन गए।

08 बहादुर आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित करने हेतु भारत सरकार ने आज़ादी के 75 साल पूरे होने के जश्न के हिस्से के रूप में बिरसा मुंडा के संघर्ष और बलिदान को मान्यता देते हुए उनके जन्मदिवस 15 नवम्बर को 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मंज़ूरी दी है।

09 'जनजातीय गौरव दिवस' भगवान बिरसा मुंडा के साथ-साथ सभी जनजातीय नायकों के संघर्ष और योगदान को सम्मानित करने का प्रतीक है।

10 वर्ष 2023 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'जनजातीय गौरव दिवस' के अवसर पर झारखंड से 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' का शुभारम्भ किया था। जनजातीय व वंचित समुदायों और उसके बाद प्रत्येक व्यक्ति तक सरकार की प्रमुख कल्याणकारी योजनाओं को पहुँचाने व उन्हें जागरूक करने के उद्देश्य से इसकी शुरुआत की गई थी।

11 भगवान बिरसा मुंडा की जीवनगाथा भारतीय समाज में साहस, आत्मसम्मान और न्याय की प्रेरणा के रूप में हमेशा याद की जाएगी।

कला को नया स्वरूप देता संग्रहालय

डॉ. संजीव किशोर गौतम
महानिदेशक,
राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा,
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

किसी भी प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्तियाँ किसी समुदाय का अभिन्न अंग होती हैं, जो उसकी परम्पराओं, मान्यताओं और लोकाचार को विकसित और प्रकट करती हैं। कला, अपने विविध रूपों में, चाहे वह दृश्य हो या प्रदर्शन, एक मजबूत चुम्बकीय आकर्षण प्रदर्शित करती है, जो कला और उसके दर्शक के बीच ध्यान और जिज्ञासु संवाद को प्रवृत्त करती है।

आज के सूचना-पश्चात युग में, अपने कई रूपों में कला की भूमिका में नाटकीय रूप से विस्तार हुआ है। सभी पीढ़ियों और विषयों में रचनात्मक विधाएँ हमारी उँगलियों पर उपलब्ध हो गई हैं, जो लगातार समकालीन कला के साथ-साथ पारम्परिक कला रूपों से प्रेरणा ले रही हैं। लघु वीडियो ब्लॉग एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरे हैं, जो विविध कला रूपों और पद्धतियों की झलक पेश करते हैं और दर्शकों को नीरस चीज़ों से बचाते हुए कुछ अद्वितीय तथा कालातीत के साथ जोड़ते हैं। अक्सर, कोई व्यक्ति किसी कला रूप या हुनर को देखने और रिकॉर्ड करने के लिए कुछ मिनटों के लिए नियमित जीवन से समय निकाल सकता है, जिसे वह बाद में प्रदर्शित कर सकता है और इसके बारे में जागरूकता बढ़ा सकता है।

प्रदर्शनी 'जन शक्ति : एक सामूहिक शक्ति' माननीय प्रधानमंत्री के मासिक रेडियो कार्यक्रम, 'मन की बात' के 100वें एपिसोड की याद दिलाती है। कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों से प्रेरित होकर यह प्रदर्शनी, प्रसिद्ध कलाकारों के कार्यों को प्रदर्शित करती है जिन्होंने सामयिक सामाजिक विषयों को सम्बोधित करते हुए कलात्मक उपलब्धियाँ हासिल कीं। ऐसी ही एक कलाकार, माधवी पारेख, स्वयं सीखकर कलाकार बनी हैं। वह गाँधीवादी दर्शन से गहराई से प्रभावित हैं, लोक और जनजातीय कला रूपों को सरल लेकिन विचारोत्तेजक रचनाओं में जोड़कर आधुनिक और समकालीन भारतीय कला को फिर से परिभाषित करती हैं। उनकी रचनाएँ दर्शकों को संवादात्मक आख्यानों में शामिल होने के लिए आमंत्रित करती हैं। मैंगलोर स्थित कलाकार, मंजूनाथ कामथ, प्रदर्शनी को और अधिक सुसंगत बनाते हुए, हमारी भूमि की समृद्ध दंतकथाओं, इसकी बोलियों, पौराणिक कथाओं, धार्मिक प्रथाओं और मौखिक रूप से प्रसारित कहानियों में अपनी अनूठी रुचि को प्रदर्शनी में लेकर आए। उनकी रचनाएँ 'श्रुति' और 'स्मृति' परम्पराओं से प्रेरणा लेते हुए, अतीत को वर्तमान से जोड़ती हैं। कामथ, संकेतों, छवियों और वस्तुओं की पुनर्कल्पना तथा पुनर्व्याख्या करके, भारत की सांस्कृतिक विरासत पर समकालीन परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं।

संग्रहालय एक बहुत ही सक्रिय और निरंतर विकसित होने वाला स्थान है, इसकी अपनी चुनौतियाँ हैं। फिर भी, राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा में, हम युवा पीढ़ी और हाशिए पर रहने वाले समुदायों सहित अपने दर्शकों के लिए संग्रहालयों को अधिक सुलभ तथा प्रासंगिक बनाने के लिए लगातार प्रयासरत हैं। इस सर्व-समावेशी दृष्टिकोण को संस्कृति मंत्रालय की प्रमुख पहलों, जैसे कि 'विकसित भारत राजदूत कार्यक्रम और कला कर्म' द्वारा और बढ़ाया गया है। इन पहलों में देश भर के हजारों कलाकारों ने भाग लिया और समान सांस्कृतिक विरासत तथा मूल्यों के साथ एक राष्ट्र से जुड़े होने की भावना प्राप्त की।

एक मौलिक सार्वजनिक कला परियोजना- प्रोजेक्ट परी, यूनेस्को विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र से पहले शुरू हुई, जिसने संग्रहालय की दीवारों के दायरे से परे कला की पहुँच को आगे बढ़ाया। इस परियोजना के प्रभाव से, कला को व्यावहारिक रूप से सड़कों पर ले जाया गया, जिससे यह आम जनता के लिए अधिक सुलभ और भरोसेमंद बन गई। यह सार्वजनिक कला परियोजना भारत की स्वदेशी संस्कृतियों तथा भारत की समृद्ध जैव विविधता और बड़े पैमाने पर दुनिया की कलात्मक प्रचुरता की ओर इशारा करती है।

उद्देश्य के लिए कैनवास

आह्वान के रूप में कला

भारत लम्बे समय से कलात्मक अभिव्यक्ति का एक जीवंत केंद्र रहा है। इसमें देश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विविधता को प्रतिबिम्बित करने वाली लोक कला का समृद्ध इतिहास है। प्राचीन चट्टानों को काटकर बनाए गए मन्दिरों और जटिल भित्तिचित्रों से लेकर सार्वजनिक स्थानों पर भव्य मूर्तियों और सड़क सम्बंधी जीवंत कला तक, भारत के परिदृश्य हमेशा कलात्मक चमत्कारों से सुशोभित रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से कला दैनिक जीवन, धार्मिक प्रथाओं और सामाजिक रीति-रिवाजों के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। नृत्य, संगीत, रंगमंच और दृश्य कला जैसे विभिन्न रूपों में कला की अभिव्यक्ति की जाती है।

फिरोजपुर में दीवार पेंटिंग

भित्तिचित्रों और मूर्तियों से लेकर प्रतिष्ठानों और मंचन कला तक, लोक कला भारत के सामाजिक विमर्श का एक महत्त्वपूर्ण पहलू बन रही है। यह हाशिए पर पड़ी आवाज़ को सुनने का अवसर देती है। इतना ही नहीं, यह महत्त्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर संवाद को बढ़ावा देने के साथ-साथ सामूहिक अभिव्यक्ति के लिए एक अच्छे माध्यम के रूप में भी कार्य करती है। नीति सन्देशों के साथ कला को एकीकृत करके भित्तिचित्र भाषा की बाधाओं को पार करते हैं और नागरिकों को एक ऐसे तरीके से जोड़ते हैं, जो भावनात्मक और सूचनात्मक दोनों हैं। इससे सार्वजनिक भागीदारी को बढ़ावा और साझा जिम्मेदारी की भावना का पोषण भी मिलता है। रंगीन, प्रेरणादायक और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक कला के माध्यम से सार्वजनिक स्थान सकारात्मक बदलाव के लिए कैनवास बन सकते हैं, जिससे सभी के लिए एक स्वच्छ, अधिक टिकाऊ भविष्य बनाने में मदद मिल सकती है।

गुवाहाटी नगर निगम द्वारा स्पॉट फिक्सिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के तहत कई दीवारों को #स्वच्छभारत थीम वाली पेंटिंग से सजाया गया।

स्वच्छ भारत अभियान में भित्तिचित्रों और लोक कला का इस्तेमाल करना समुदायों को शिक्षित करने, आपस में जोड़ने और प्रेरित करने के लिए रचनात्मकता का उपयोग करके स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण को बढ़ावा देने का एक प्रभावशाली तरीका दर्शाता है। इसी तरह इन कलाओं ने 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान के लिए जागरूकता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

यूनिट-9 फूड स्ट्रीट एरिया, #भुवनेश्वर में चित्रकला प्रतियोगिता के दीवारों को जीवंत रूप मिला

सूचना, शिक्षा और संवाद (आईईसी) अभियान के तहत महाराष्ट्र में दीवार पेंटिंग के क्रियाकलाप संचालित किए गए। इसका उद्देश्य #स्वच्छता और #सुरक्षित #स्वच्छता के महत्त्व के बारे में जागरूकता पैदा करना था।

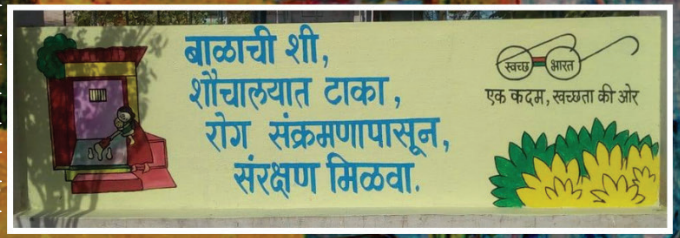

इसमें प्रभावशाली दृश्य सन्देश बनाए गए हैं, जो विविध दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित होते हैं और महिला-पुरुष समानता, लड़कियों की शिक्षा के महत्त्व और महिलाओं को सशक्त बनाने सम्बंधित बातचीत को बढ़ावा देते हैं। इसके अतिरिक्त, यह अभियान के सन्देश को आगे बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया का भी इस्तेमाल करते हैं। इससे ये विभिन्न क्षेत्रों और जनसांख्यिकी में सुलभ और प्रासंगिक हो जाता है।

फैजाबाद जिला पुस्तकालय में दीवार-पेंटिंग प्रतियोगिता

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जिला सांबा के सरकारी हाई स्कूल, जाख में दीवार पेंटिंग के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम

जम्मू-कश्मीर के सांबा में डीसी कार्यालय परिसर नंदनी हिल्स में दीवार पेंटिंग

संस्कृति के संरक्षक

भारत की सांस्कृतिक विरासत विविध लोक कलाओं का सम्मिश्रण है। इनमें से प्रत्येक सदियों पुरानी परम्पराओं में सन्निहित है। अनंतनाग से फिरदौसा, उधमपुर से गोरीनाथ, तेलंगाना से डी. वैकुंठम और छत्तीसगढ़ से बुटलूराम माथरा कुछ ऐसे कलाकारों में शामिल हैं, जो कला के विभिन्न स्वरूपों को संरक्षित और पुनर्जीवित करने में जी-जान से जुटे हैं। कैलीग्राफी, पारम्परिक संगीत, कथा वाचन और आदिवासी शिल्प के माध्यम से वे युवाओं को देश के समृद्ध इतिहास और पौराणिक कथाओं से जोड़ रहे हैं। इस प्रकार वे अतीत को वर्तमान से जोड़ रहे हैं। कार्यक्रम 'मन की बात' में ऐसे प्रयासों को महत्त्व दिया गया है जो भारत की सांस्कृतिक विरासत को निरंतर कायम रखने की प्रेरणा देते हैं।

कश्मीर में कैलीग्राफी

पारम्परिक अरबी और उर्दू कैलीग्राफी लम्बे समय से कश्मीर में कला का एक प्रतिष्ठित स्वरूप रहा है। इसकी प्रवाहपूर्ण लिपि सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का प्रतीक है। अनंतनाग की एक कुशल कैलीग्राफर फिरदौसा बशीर, खासकर युवाओं के बीच इस कला को पुनर्जीवित कर रही हैं।

फिरदौसा बशीर

"मैं बहुत खुश हूँ और मेरे परिवार को भी मुझ पर गर्व है। उनका मानना है कि मैं कुछ सार्थक कर रही हूँ। मेरा लक्ष्य भविष्य में कैलीग्राफी कलाकार के रूप में खुद को स्थापित करना और भारत को गौरव दिलाना है। बहुत-से लोग मेरी कैलीग्राफी कला देखकर खुश होते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। कुछ तो यहाँ तक कहते हैं कि वे अपने बच्चों को यह कला सीखने के लिए मेरे पास भेजना चाहते हैं।"

डोगरी सारंगी संगीत और कथा वाचन

कश्मीर के डोगरा क्षेत्र में डोगरी भाषा और एक तार वाला पारम्परिक वाद्य – सारंगी, एक अनूठी सांस्कृतिक जोड़ी बनाते हैं। यह दुर्लभ लोक संगीत प्राचीन योद्धाओं, संतों और ऐतिहासिक हस्तियों की कहानियाँ सुनाता है। उधमपुर के गोरीनाथ एक समर्पित कलाकार हैं, जो 1930 की सारंगी के साथ डोगरा आख्यानों की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर रहे हैं।

गोरीनाथ

"मैं केवल डोगरी भाषा जानता हूँ। कई श्रोता मुझे अन्य भाषाओं में गाने के लिए कहते हैं, लेकिन हर बार, मैं बहुत विनम्र और विनीत होता हूँ। मैं मना कर देता हूँ और अनुरोध करता हूँ कि मैं केवल डोगरी में गाता हूँ, क्योंकि डोगरी भाषा बहुत मीठी है। सारंगी नामक यह वाद्य यंत्र आजादी के पूर्व 1930 से मेरे परिवार के पास है।
जब मैं डोगरी में गाता हूँ, तो स्थानीय श्रोताओं पर इसका प्रभाव पड़ता है। मैं केवल डुग्गर क्षेत्र के महापुरुषों, जैसे बाबा कालीवीर, राजा मंडलीक, बाबा सिद्ध गौरियन, पूरन भगत और राजा हरि सिंह से जुड़े आख्यान और कहानियाँ सुनाता हूँ।"

भारत की विरासत को संरक्षित करने वाले कलाकार

तेलंगाना की चेरियाल स्क्रॉल पेंटिंग

तेलंगाना में 13वीं शताब्दी में शुरू हुई चेरियाल कला, चित्रित कहानी कहने का एक स्वरूप है। इसमें लम्बे स्क्रॉल पौराणिक कथाओं और इतिहास के दृश्यों को दर्शाते हैं। चेरियाल पेंटिंग के उस्ताद डी. वैकुंठम ने इस कला को बढ़ावा देने में लगभग पाँच दशक बिताए हैं।

डॉ. वैकुंठम

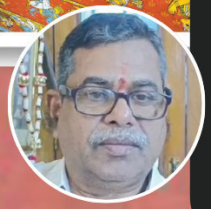

"मुझे खुशी है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में मेरा नाम लिया। इससे इस कला को और लोकप्रिय बनाने और इसे अगली पीढ़ियों तक ले जाने में मदद मिलेगी।
इस कला को कई कलाकार जानते हैं, लेकिन मेरे पिता ने इसे आगे बढ़ाने में रुचि दिखाई। मेरे पिता ने इस कला को संरक्षित करने के लिए प्रयास किए हैं और मैंने उनसे सीखा है। यह हमारा पेशा बन गया है। मेरा परिवार सामूहिक रूप से इस कला को संरक्षित करने के लिए काम कर रहा है। मैं इस कला को निरंतर कायम रखूँगा और इच्छुक व्यक्तियों को इसे सिखाने के लिए तैयार हूँ।"

छत्तीसगढ़ की अबूझमाड़िया जनजाति

छत्तीसगढ़ की अबूझमाड़िया जनजाति के बुटलूराम माथरा 30 से 35 व्यक्तियों के समूह का नेतृत्व करते हैं। वे उन्हें रोजगार प्रदान करते हैं। साथ मिलकर वे बाँस से संगीत वाद्ययंत्र बनाते हैं और उनमें आदिवासी कला के विभिन्न स्वरूपों को शामिल करते हैं। इसके बाद वे देश के विभिन्न हिस्सों में अपने पारम्परिक लोक नृत्य और संगीत का प्रदर्शन करते हैं, जो दुनिया के सामने उनकी स्वदेशी कला की प्रामाणिकता और कालातीतता को खूबसूरती से प्रदर्शित करते हैं।

बुटलूराम माथरा

"मैं बाँस शिल्प और नृत्य के क्षेत्र में काम कर रहा हूँ। वर्तमान में, मैं बाँस शिल्प व्यवसाय चला रहा हूँ। यह व्यवसाय कारीगरों को रोजगार प्रदान करता है। नृत्य के क्षेत्र में, मैं हजारों कलाकारों के साथ सहयोग कर रहा हूँ। मैंने प्रधानमंत्री की विभिन्न योजनाओं जैसे 'मेरी माटी मेरा देश', 'हर घर तिरंगा' और 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' में भी नृत्य प्रस्तुत किया है और उनके प्रचार-प्रसार में योगदान दिया है। मैं लोगों को कला के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाने का सन्देश देना चाहता हूँ।"

भारतीय कला और संस्कृति को संरक्षित करने वाली

अंतरराष्ट्रीय आवाज़ें

...दोस्तो, विदेशी धरती पर भारत के ये उदाहरण बताते हैं कि भारतीय संस्कृति की शक्ति कितनी अद्भुत है। यह लगातार दुनिया को अपनी ओर आकर्षित कर रही है।

"जहाँ कला है, वहाँ भारत है"

"जहाँ संस्कृति है, वहाँ भारत है"

"आज दुनिया भर के लोग भारत को जानना चाहते हैं...भारत के लोगों को जानना चाहते हैं। इसलिए मेरा आप सबसे अनुरोध है...अपने आस-पास ऐसी सांस्कृतिक पहलों को बढ़ावा दें। उन्हें : CulturalBridges के साथ साझा करें।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'मन की बात' सम्बोधन में

जैसे-जैसे भारत की कालातीत संस्कृति महाद्वीपों में फैलती जा रही है, इसकी कलाएँ दिलों और दिमागों को जोड़ने का एक शक्तिशाली सेतु बन रही हैं। चाहे वह पेरू में भरतनाट्यम की जटिल पदचाप हो, अरबी में रामायण का भावपूर्ण अभिव्यक्ति हो या दक्षिण अमरीका में ओडिसी का भावपूर्ण नृत्य हो, भारतीय शास्त्रीय कलाएँ एक ऐसी सार्वभौमिक भाषा को बढ़ावा दे रही हैं, जो आत्मा से बात करती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल में अपने मन की बात सम्बोधन में इस सांस्कृतिक प्रभाव को रेखांकित किया।

"अनुवाद करना और एक-दूसरे को समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है। भारत और कुवैत के बीच पुराने सम्बंध हैं तथा हमें एक-दूसरे को और अधिक समझने की आवश्यकता है। मुझे एहसास हुआ कि अरबी पुस्तकों में रामायण और महाभारत के पूर्ण ग्रंथ नहीं हैं। सभी भारतीय किंवदंतियों में कुछ बहुत खास है। सबसे अच्छी बात यह है कि ये कहानियाँ सब कुछ बताती हैं - भारतीय दर्शन, विज्ञान और कल्पना, जो कहीं और नहीं है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि हम ऐसी महान किंवदंतियों को क्यों नहीं जानते? रामायण और महाभारत पढ़ने के बाद मुझे यकीन हो गया कि ये दुनिया में नम्बर एक हैं, और यह सच है।"

-अब्दुल्लतीफ़ अल-निस्फ, अब्दुल्ला अल-बरुन, कुवैत द्वारा अरबी भाषा में अनुवादित रामायण और महाभारत के प्रकाशक।

"मेरे परिवार और मेरे विद्यार्थियों, दोनों के लिए पिछले 24 साल आसान नहीं रहे हैं। हमें कई त्याग करने पड़े हैं। कई बार ऐसा हुआ कि मैं उन्हें हार मानते हुए देख सकती थी, लेकिन, 'मन की बात' जैसे मंच पर अपना नाम सुनकर नाट्य कला में मेरा विश्वास और मजबूत हुआ और मैं आगे बढ़ने के लिए प्रेरित हुई।"

-हर्लिंडा गोंजालीज, भरतनाट्यम गुरु, लीमा, पेरू

"मुझे उम्मीद है कि मैं पेरू के हर कोने में ओडिसी को ला पाऊँगी, खासकर बच्चों के बीच। मैं भारतीय शास्त्रीय कला रूपों को मन, शरीर और आत्मा से जुड़ने के तरीके के रूप में देखने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना चाहती हूँ और साथ ही अपनी कहानी कहने के तरीके के रूप में भी। मुझे उम्मीद है कि मैं भारत के अनुभव और बौद्धिकता अपने समुदाय के साथ साझा कर पाऊँगी, जबकि मैं खुद पेरू के प्राचीन ज्ञान और प्राचीन ज्ञान के बारे में फिर से सीखूँगी।"

-मारिया लॉरा वाल्डेज, ओडिसी डांसर, अरेक्विपा, पेरू

एवीजीसी-एक्सआर क्षेत्र का उदय

एनिमेशन के माध्यम से भारत के विकास को गति

"भारत के एनीमेशन character, एनीमेशन movies, content और creativity के कारण पूरी दुनिया में पसंद किए जा रहे हैं। आपने देखा होगा कि स्मार्टफोन से लेकर सिनेमा स्क्रीन, गेमिंग कंसोल से लेकर वर्चुअल रियलिटी तक, एनीमेशन हर जगह मौजूद है। भारत एनीमेशन की दुनिया में एक नई क्रांति लाने की ओर अग्रसर है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

"भारतीय एनीमेशन उद्योग एक चौराहे पर खड़ा है। आउटसोर्सिंग में एक ठोस आधार के साथ, यह अब मूल सामग्री निर्माण का पता लगाने के लिए तैयार है। हालाँकि चुनौतियाँ बनी हुई हैं, डिजिटल तकनीकों का विकास, एक मजबूत प्रतिभा पूल और सरकारी समर्थन इस क्षेत्र के विस्तार के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं।"

– पी. जयकुमार
सीईओ, टून्स मीडिया ग्रुप

एनीमेशन, विज़ुअल इफेक्ट (वीएफएक्स), गेमिंग, कॉमिक्स और एक्सटेंडेड रियलिटी (एवीजीसी-एक्सआर) क्षेत्र भारत के आर्थिक परिदृश्य में एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है। इस उद्योग ने हाल के वर्षों में महत्त्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की है। यह 'उदीयमान क्षेत्र' के रूप में स्थापित हुआ है। इससे राष्ट्रीय विकास और वैश्विक प्रभाव, दोनों में महत्त्वपूर्ण योगदान मिलने की सम्भावना है। इसमें भारतीय संस्कृति को विश्व भर के दर्शकों के सामने प्रस्तुत करने, प्रवासी समुदाय को जोड़ने, पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ-साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करने की अपनी अनूठी क्षमता भी है। इस प्रकार एवीजीसी-एक्सआर क्षेत्र देश के भविष्य को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत के कुशल कार्यबल और किफायती समाधानों ने अंतरराष्ट्रीय रुचि को आकर्षित किया है। इससे देश उच्च-स्तरीय कौशल-आधारित गतिविधियों का केंद्र बन गया है। एवीजीसी-एक्सआर क्षेत्र की क्षमता को पहचानते हुए सरकार ने एवीजीसी टास्क फोर्स के गठन सहित अनेक सकारात्मक कदम उठाए हैं। इस क्षेत्र की रोजगार क्षमता का प्रचार करने के लिए रोजगार के अधिक अवसर पैदा करने और इस क्षेत्र में काम करने वाले रोजगार योग्य पेशेवरों की संख्या बढ़ाकर माँग और आपूर्ति दोनों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसलिए, एवीजीसी-एक्सआर क्षेत्र को इसकी वास्तविक क्षमता का एहसास कराने और भारत को एक अग्रणी वैश्विक भागीदार बनाने में सहायता करने के लिए एक समग्र नीति को लागू करने की अत्यंत आवश्यकता है। इस टास्क फोर्स ने इस क्षेत्र के विकास के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय एवीजीसी-एक्सआर मिशन के निर्माण का प्रस्ताव रखा। सिफारिशों को चार मुख्य रणनीतियों में वर्गीकृत किया गया:

क. वैश्विक पहुँच के लिए घरेलू उद्योग का विकास

ख. जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने के लिए टैलेंट इकोसिस्टम का विकास

ग. भारतीय एवीजीसी उद्योग के लिए प्रौद्योगिकी और वित्तीय व्यवहार्यता का विस्तार

घ. समावेशी विकास के माध्यम से भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाना

इन रणनीतियों को लागू करने के लिए, वेव्स शिखर सम्मेलन के हिस्से के रूप में 'क्रिएट इन इंडिया' चैलेंज का शुभारम्भ किया गया, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन के दौरान उनके महत्त्व के बारे में चर्चा की। यह अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से प्रतिभाओं को पोषित करने, विश्व स्तरीय एनिमेटरों, चित्रकारों, सीजी कलाकारों और गेम डेवलपर को तैयार करने पर जोर देता है। एनीमेशन और गेमिंग से लेकर संगीत और उभरती हुई तकनीकों तक, ये चैलेंज प्रतिभागियों को नए अवसर तलाशने, अपनी प्रतिभा को दर्शाने और वैश्विक मीडिया एवं मनोरंजन उद्योग में भारत की उभरती गाथा में योगदान देने के लिए प्रेरित करते हुए उन्हें सशक्त बनाने के लिए

डिज़ाइन किए गए हैं। अनुभवी पेशेवरों से लेकर उत्साही शौकिया लोगों तक, वेव्स 2025 सभी को इस असाधारण यात्रा में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है, जहाँ रचनात्मकता अवसर से मिलती है और जहाँ मनोरंजन का भविष्य आकार लेता है।

सरकार ने एवीजीसी-एक्सआर के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (एनसीओई) को भी चैम्पियन बनाया है, जो इकोसिस्टम की आधारशिला के रूप में खड़ा है। भारतीय रचनात्मक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी) के रूप में नामित, इस संस्थान को नौसिखियों और विशेषज्ञों दोनों को अत्याधुनिक कौशल से सुसज्जित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने का काम सौंपा गया है। यह नवाचार को बढ़ावा देने के लिए कम्प्यूटर विज्ञान, इंजीनियरिंग, डिजाइन और कला से जुड़े बहु-विषयक अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है।

यह आईआईटी और आईआईएम जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के आधार पर बनाया गया है, जिन्होंने दुनिया की कुछ बेहतरीन तकनीकी और प्रबंधकीय प्रतिभाओं (उनमें से कुछ गूगल, माइक्रोसॉफ्ट आदि जैसी बड़ी कम्पनियों का नेतृत्व कर रहे हैं) को जन्म दिया है। यह संस्थान रचनात्मक कौशल और ज्ञान के विकास पर ध्यान केंद्रित करेगा।

इसके अतिरिक्त यह भारतीय बौद्धिक सम्पदा (आईपी) के विकास को भी प्राथमिकता देगा, जो देश की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को दर्शाता है। इस प्रकार यह स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय दर्शकों की जरूरत को पूरा करता है। यह एक इनक्यूबेटर के रूप में कार्य करता है,

जो स्टार्टअप और शुरुआती चरण के व्यवसायों को संसाधनों और विशेषज्ञता के साथ समर्थन देता है। इतना ही नहीं, यह अकादमिक और उत्पादन के लिए उत्प्रेरक के रूप में भी कार्य करता है।

शिक्षा के क्षेत्र में एवीजीसी का एकीकरण इसकी क्षमता को और भी उजागर करता है। यह एनिमेटेड सामग्री और गेमीफाइड शिक्षण उपकरणों के माध्यम से शिक्षण के कार्य को और अधिक इंटरैक्टिव और आकर्षक बनाता है। बाहुबली और आरआरआर जैसी फिल्मों की सफलता ने दिखाया है कि कैसे भारतीय सिनेमा कहानी कहने की कला को फिर से परिभाषित कर सकता है, इतिहास और फंतासी को सम्मिण कर उन्हें उन्नत परिणाम दे सकता है। इस बदलाव ने पीएस-1 और कल्कि जैसी समान प्रस्तुतियों को प्रेरित किया है। फिक्की-ईवाई 2024 की रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत अब एनीमे प्रशंसकों की संख्या के संदर्भ में दुनिया में दूसरे स्थान पर है। इसका एनीमे में रुचि सम्बंधी वैश्विक प्रगति में 60 प्रतिशत का अनुमानित योगदान है।

स्वदेशी प्रतिभा को प्राथमिकता देने के साथ-साथ घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों के लिए भारत में निर्मित अभिनव सामग्री को प्रोत्साहित करने वाले 'क्रिएट इन इंडिया' अभियान के बल पर अपना देश वैश्विक एवीजीसी-एक्सआर डोमेन में एक महत्त्वपूर्ण योगदानकर्ता बनने के लिए तैयार है। 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' का विज़न, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने, रोज़गार पैदा करने और वैश्विक मीडिया और मनोरंजन उद्योग में अपने दर्जे को ऊपर उठाने के साथ-साथ अपनी संस्कृति की अमिट छाप छोड़ने एवं अपनी उपस्थिति बढ़ाने की भारत की आकांक्षा के अनुरूप है।

अंतरराष्ट्रीय एनिमेशन दिवस

भारत में एनिमेशन की कला और विरासत का सम्मान

हर वर्ष 28 अक्टूबर को मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय एनिमेशन दिवस (आईएडी) की शुरुआत 2002 में इंटरनेशनल एनिमेटेड फिल्म एसोसिएशन (ASIFA) ने एनिमेशन की कला को वैश्विक स्तर पर सम्मानित करने के लिए की थी। यूनेस्को के सदस्य ASIFA ने सांस्कृतिक और कलात्मक कहानी कहने में एनिमेशन के महत्त्व और प्रभाव को बढ़ावा देने के लिए इसकी शुरुआत की थी।

एनीमेशन क्या है?

एनीमेशन एक फिल्म निर्माण तकनीक है जिसके द्वारा स्थिर छवियों को गतिशील छवियाँ बनाने के लिए हेरफेर किया जाता है। पारम्परिक एनिमेशन में छवियों को पारदर्शी सेल्यूलॉयड शीट पर हाथ से खींचा या चित्रित किया जाता है ताकि उनके माध्यम से फिल्म (रील) पर फोटोग्राफ प्रदर्शित किए जा सकें।

भारतीय एनिमेशन के जनक

भारतीय एनिमेशन के जनक के रूप में पहचाने जाने वाले राम मोहन (1931-2019) एक अग्रणी एनिमेटर, शीर्षक डिजाइनर और शिक्षक थे। उन्होंने 1956 में भारतीय फिल्म प्रभाग की कार्टून फिल्म्स यूनिट में अपना करियर शुरू किया। राम मोहन ने 'यू सेड इट (1972)' और 'फायर गेम्स (1983)' के लिए सर्वश्रेष्ठ गैर-फीचर एनिमेशन फिल्म के लिए दो बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता। उनके आजीवन योगदान के सम्मान में उन्हें 2006 के मुम्बई अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार मिला और 2014 में उन्हें भारत के चौथे सबसे बड़े नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

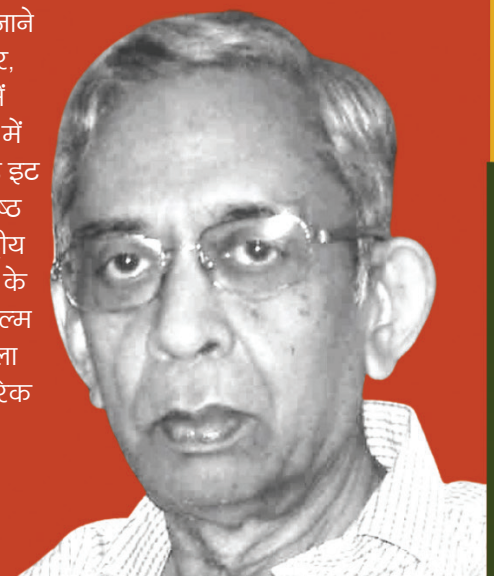

भारत की पहली प्रमुख एनिमेशन फिल्म

'द बनयान डियर' ने भारतीय फिल्म प्रभाग (एफडीआई) द्वारा रंगीन रूप में निर्मित पहली प्रमुख एनिमेटेड फिल्म के रूप में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर चिह्नित किया।, भारत की विविध कथाओं को फिल्म में दर्शाने के मिशन के साथ, 1948 में स्थापित भारतीय फिल्म प्रभाग ने एक दशक के भीतर कार्टून फिल्म यूनिट बनाकर अपने दायरे का विस्तार किया। इसने बच्चों के लिए एक प्रभावी शैक्षिक माध्यम के रूप में एनिमेशन को मान्यता दी।

'द बनयान डियर' की कहानी एक दयालु सुनहरे हिरण पर केंद्रित है, जो अपने झुंड का नेतृत्व करता है। एक नि:स्वार्थ कार्य के लिए शिकार करने के जुनूनी मानव राजा के सामने वह स्वेच्छा आ जाता है। वह राजा एक हिरण की माता का शिकार करना चाहता था। हिरण की बहादुरी और सहानुभूति से प्रभावित राजा न केवल सुनहरे हिरण को बल्कि पूरे झुंड को छोड़ देता है।

प्रभाग ने इस कहानी को इसकी गहन नैतिक शिक्षाओं के कारण चुना था, जो भारतीय संस्कृति में गहराई से निहित मूल्यों को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त, कहानी का बौद्ध धर्म से सम्बंध - भारत में निहित परम्परा - देश की समृद्ध कलात्मक विरासत के साथ मिलकर रचनात्मक टीम के लिए प्रेरणा का स्रोत प्रदान करता है।

दूरदर्शन ने पुरस्कार विजेता, एनिमेटर और फिल्म निर्माता, हरिनारायण राजीव से भी बात की, जिनके काम की सराहना, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अपने 'मन की बात' सम्बोधन में की।

अभी भी इस पर विश्वास नहीं हो रहा है, लेकिन मैं आपको बता सकता हूँ कि इसका कितना फायदा हुआ है। मैंने हमारे काम का महत्त्वपूर्ण प्रभाव देखा है- अब अधिक लोग एनिमेटर बनने के लिए उत्सुकता दिखा रहे हैं। कई लोगों को यह भी नहीं पता था कि भारत में एनीमेशन उद्योग मौजूद है, इसलिए यह उनके लिए आश्चर्यजनक था। मैं इस उद्योग की तीव्र वृद्धि और भविष्य की प्रतिभाओं को प्रेरित करते हुए, उनका मार्गदर्शन करने में सक्षम हूँ, जिससे देश को लाभ होता है।

एनीमेशन में, नई तकनीक और नवाचारों के उभरने के साथ निरंतर सीखना और अनुकूलनशीलता आवश्यक है। यहाँ तक कि जब उन्होंने मुझे पहचाना, तब भी वह वास्तव में सम्पूर्ण एनीमेशन दृश्य प्रभाव समुदाय को पहचान रहा था। उनको बहुत बड़ा धन्यवाद क्योंकि इसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। इस बात ने खूब चर्चा पैदा की है।

-हरिनारायण राजीव, पुरस्कार विजेता एनिमेटर और फिल्म निर्माता

विश्व पटल पर भारतीय एनिमेशन उद्योग

पी. जयकुमार
सीईओ, टून्स मीडिया ग्रुप

भारतीय एनिमेशन उद्योग एक छोटे, विशिष्ट क्षेत्र से एनिमेशन सेवाओं में एक वैश्विक शक्ति में बदल गया है। कभी पश्चिमी कम्पनियों के लिए आउटसोर्सिंग के कार्य के लिए जाना जाने वाला भारत अब अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, कुशल प्रतिभा और किफायती उत्पादन क्षमताओं के साथ वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धा करता है। हालाँकि वैश्विक स्तर की तुलना में मूल सामग्री बनाने के लिए भारत को अब भी महत्त्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसके लिए नवाचार, निवेश और रचनात्मकता की आवश्यकता है।

भारतीय एनिमेशन उद्योग का विकास

भारत की एनिमेशन यात्रा 1990 के दशक के पूर्वांध में शुरू हुई। प्रारम्भ में यह मुख्य रूप से पश्चिमी आउटसोर्सिंग परियोजनाओं के लिए 2डी एनिमेशन पर केंद्रित थी। 2000 के दशक में जैसे-जैसे डिजिटल तकनीकें आगे बढ़ीं, भारतीय स्टूडियो ने अपनी क्षमताओं का विस्तार करते हुए सीजीआई और 3डी एनिमेशन को तेज़ी से अपनाया। टून्स एनिमेशन और रिलायंस मीडियावर्क्स जैसी प्रमुख कम्पनियों ने 'द जंगल बुक' और 'द क्रॉनिकल्स ऑफ नार्निया' जैसी हॉलीवुड फिल्मों के लिए सामग्री का निर्माण किया।

2010 के दशक तक भारत आउटसोर्स सेवाओं के साथ-साथ मूल एनीमेशन सामग्री के लिए भी एक केंद्र के रूप में विकसित हो चुका था। नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम और डिजनी+ जैसे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के उदय ने नए दरवाजे खोले। इससे भारतीय एनिमेटेड सामग्री को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली और इसके बाद विकास को बढ़ावा मिला।

विकास के प्रमुख इंजन

कई कारक भारत के एनीमेशन क्षेत्र को तेज़ी से विस्तार दे रहे हैं:

1. उत्पादन पर कम लागत : भारत में उत्पादन पर कम लागत ने इसे वैश्विक स्टूडियो के लिए एक आकर्षक आउटसोर्सिंग गंतव्य बना दिया है। इसके परिणामस्वरूप अपना देश कम लागत पर उच्च गुणवत्ता वाले एनीमेशन प्रदान करता है।

2. सामग्री की बढ़ती माँग : स्ट्रीमिंग सेवाओं में वैश्विक उछाल ने एनिमेटेड श्रृंखला और फिल्मों की माँग में वृद्धि की है। भारतीय स्टूडियो अब इन प्लेटफार्मों के लिए मूल सामग्री का उत्पादन कर रहे हैं, जिससे उद्योग की वृद्धि को बढ़ावा मिल रहा है।

3. सरकारी सहायता : भारत सरकार ने कई पहल शुरू की हैं। इन पहलों में एवीजीसी (एनीमेशन, विज़ुअल इफेक्ट्स, गेमिंग और कॉमिक्स) नीति, कर प्रोत्साहन और बुनियादी ढाँचा सम्बंधी समर्थन प्रदान करना शामिल है। एवीजीसी में राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र के लिए स्वीकृति मिलने से कौशल विकास और बुनियादी ढाँचे के विस्तार को बढ़ावा मिलेगा।

4. प्रतिभा पूल : भारत का प्रतिभा पूल एक प्रमुख ताकत है। इसमें विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त तकनीकों में प्रशिक्षित उच्च कुशल एनिमेटर, कलाकार और तकनीकी पेशेवर हैं। यह पूल तेज़ी से बहुमुखी हो गया है। इसके परिणामस्वरूप हमारे स्टूडियो अधिक परिष्कृत परियोजनाओं को सम्भालने में सक्षम हो गए हैं।

नई तकनीकों को अपनाना

भारतीय स्टूडियो ने अपने प्रोडक्शन को बेहतर बनाने के लिए सीजीआई, वीआर, एआर और मोशन कैप्चर जैसी उभरती हुई तकनीकों को तेज़ी से अपनाया है। सीजीआई

उच्च-गुणवत्ता वाली, विज़ुअल तौर पर आकर्षक सामग्री बनाने की सुविधा देता है, जो अब भारतीय एनिमेटेड फिल्मों में एक मुख्य तत्व है। ग्रीन गोल्ड एनिमेशन और टून्स मीडिया जैसे स्टूडियो ने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों के लिए सामग्री बनाने के लिए सीजीआई का उपयोग किया है।

मोशन कैप्चर का उपयोग यथार्थवादी चरित्र एनिमेशन बनाने के लिए भी किया जा रहा है। हालाँकि भारत में वीआर और एआर अब भी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में हैं, लेकिन उनमें अपार सम्भावनाएँ हैं, जिनमें से इंटरेक्टिव गेमिंग और स्टोरीटैलिंग ऐसे प्रमुख क्षेत्र हैं, जहाँ भारतीय स्टूडियो प्रयोग करना शुरू कर रहे हैं।

वैश्विक बाजारों के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण

कुशल एनीमेशन पेशेवरों की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए भारत का शैक्षिक परिदृश्य विकसित हुआ है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिज़ाइन (एनआईडी), व्हिसलिंग वुड्स इंटरनेशनल और टून्स एकेडमी जैसे अग्रणी संस्थान एनीमेशन, वीएफएक्स और गेमिंग में विशेष पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। यह संस्थान उद्योग के अनुकूल स्तरीय सॉफ्टवेयर और तकनीकों को अपने पाठ्यक्रमों में शामिल करते हैं।

इसके अलावा भारतीय स्कूलों और वैश्विक स्टूडियो के बीच साझेदारी ने इंटर्नशिप के अवसर पैदा किए हैं। इससे छात्रों को व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने और अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करने वाले कौशल विकसित करने का मौका मिला है।

वैश्विक स्तर पर विस्तार के क्रम में चुनौतियाँ

विकास के बावजूद भारतीय एनीमेशन उद्योग को कुछ प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है:

1. आउटसोर्सिंग की धारणा : भारतीय स्टूडियो को अक्सर मूल सामग्री के निर्माता के बजाय आउटसोर्सिंग प्रदाता के रूप में देखा जाता है। यह धारणा भारत की रचनात्मक क्षमताओं की वैश्विक मान्यता को सीमित करती है।

2. बजट की बाधाएँ : उच्च गुणवत्ता वाली मूल सामग्री का उत्पादन करने के लिए पर्याप्त निवेश की आवश्यकता होती है। हॉलीवुड के बड़े बजट के साथ प्रतिस्पर्धा करना कई भारतीय स्टूडियो के लिए एक महत्त्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।

3. गुणवत्ता की स्थिरता : भारतीय एनीमेशन की गुणवत्ता में सुधार होने के बावजूद परियोजनाओं में स्थिरता बनाए रखना, विशेष रूप से तंग समय-सीमा और सीमित बजट, एक बाधा बनी हुई है।

मूल भारतीय सामग्री की सम्भावनाएँ

विशेष रूप से वैश्विक अपील के साथ मूल सामग्री के निर्माण में भारतीय एनीमेशन के लिए भविष्य आशाजनक है। नेटफ्लिक्स पर माइटी लिटिल भीम जैसे शो ने साबित कर दिया है कि भारतीय एनीमेशन वैश्विक दर्शकों को आकर्षित कर सकता है। प्रगति की ओर अग्रसर भारतीय स्टूडियो सार्वभौमिक विषयों और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध कथाओं पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जो उन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धियों से अलग करती हैं।

भारत की समृद्ध लोककथाओं को कथा वाचन की आधुनिक तकनीकों के साथ जोड़कर भारतीय स्टूडियो वैश्विक एनीमेशन उद्योग में अपने लिए एक अनूठी जगह बना सकते हैं।

निष्कर्ष :

भारतीय एनीमेशन उद्योग एक चौराहे पर खड़ा है। आउटसोर्सिंग में एक ठोस आधार के साथ यह अब मूल सामग्री निर्माण के सन्दर्भ में सम्भावनाएँ तलाशने के लिए तैयार है। विभिन्न चुनौतियों के बीच, डिजिटल तकनीकों का विकास, एक मजबूत प्रतिभा पूल और सरकारी समर्थन इस क्षेत्र के विस्तार के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं। निरंतर रचनात्मकता और निवेश के साथ भारत वैश्विक एनीमेशन परिदृश्य में अपनी स्थायी उपस्थिति सुनिश्चित कर सकता है।

भारत में गेमिंग सेक्टर

तीर्थ हिरेन मेहता
2018 एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता (ई-स्पोर्ट्स-हर्थस्टोन), और गेम डेवलपर

हाल के वर्षों में भारत में गेमिंग सेक्टर में बहुत बड़ा बदलाव आया है। इसे कभी एक सामान्य शगल माना जाता था। किंतु इसे अब गेम डेवलपमेंट और पेशेवर ई-स्पोर्ट्स एथलीट दोनों के रूप में एक व्यवहार्य करियर के रूप में पहचान मिली है। इस डिजिटल क्रांति के दो पहलू– गेम डेवलपमेंट इंडस्ट्री और ई-स्पोर्ट्स इंडस्ट्री हैं, जो समानांतर रूप से चलते हैं।

भारत की गेम डेवलपमेंट इंडस्ट्री ने तकनीक-प्रेमी आबादी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में की गई विभिन्न पहलों की बदौलत तेज़ी से प्रगति की है। 'डिजिटल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' पहलों ने तकनीकी दिग्गजों और विभिन्न स्टार्ट-अप को गेम डेवलपमेंट के क्षेत्र में नई तलाश के लिए प्रोत्साहित किया है। इससे भारत ने दुनिया के सबसे तेज़ी से बढ़ते उद्योगों में से एक में अपना कदम रखा है। बड़े पैमाने पर इंटरनेट की पहुँच, किफायती और सुलभ स्मार्टफोन तथा तेज़ दिमाग वाले युवाओं के बल पर भारत गेमिंग के क्षेत्र में एक प्रमुख भागीदार बनने की राह पर है।

कई मेड इन इंडिया गेम्स ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़ा प्रभाव डाला है। 'राजी: एन एनशिएंट एपिक' जैसे शीर्षक आधुनिक ग्राफिक्स और गेमप्ले मैकेनिक्स के साथ-साथ समृद्ध भारतीय संस्कृति और पौराणिक कथाओं को दर्शाने के लिए प्रसिद्ध हैं। खेल युवाओं का ध्यान आकर्षित करने का एक शानदार तरीका है और इसका उपयोग दुनिया के लाभ के लिए भी किया जा सकता है। खेलों का उपयोग चिकित्सा, अर्थशास्त्र, शिक्षा, सैन्य, पारिस्थितिकी और अन्य क्षेत्रों में दुनिया की वास्तविक समस्याओं को हल करने के लिए किया जा रहा है।

भारत ने गेम डेवलपमेंट को जल्दी ही अपना लिया था, किंतु ई-स्पोर्ट्स को शुरू होने में काफी समय लगा। ई-स्पोर्ट्स संगठित, प्रतिस्पर्धी वीडियो गेमिंग को संदर्भित करता है, जहाँ खिलाड़ी या टीम पुरस्कार और गौरव के लिए एक-दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करते हैं। इस शब्द को अपनी स्वीकृति में ही चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ऐसा इसलिए हुआ कि कई लोगों ने ई-स्पोर्ट्स को रमी या तीन पत्ती जैसे असली पैसे वाले जुए के समान माना, जबकि अन्य ने इसे लूडो जैसे कैजुअल गेम के समान माना। युवाओं को इस शब्द को आम जनता तक पहुँचाने और उसका सम्मान करने के लिए बहुत प्रयास और समर्पण करना पड़ा। इसमें सफलता तब मिली जब ई-स्पोर्ट्स को एक प्रदर्शन कार्यक्रम के रूप में एशियाई खेल 2018 में शामिल किया गया।

तब से इस उद्योग का काफी विस्तार हुआ है। अंतरराष्ट्रीय आयोजकों और प्रायोजकों ने विशेष रूप से मोबाइल गेम के लिए भारतीय गेमर की विशाल बाजार क्षमता का उपयोग करते हुए, उद्योग को फलने-फूलने का मौका दिया है। फिर भी, एक बच्चे को अक्सर अपने माता-पिता को कुछ समझाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह सब ऐसा कुछ है जिसके बारे में अभी भी जागरूकता की आवश्यकता है।

दूरदर्शी नेतृत्व का बहुत प्रभाव बड़ा रहा है– न केवल तकनीकी दृष्टिकोण से बल्कि मानसिक दृष्टिकोण से भी। जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अग्रणी लोगों के साथ गेमिंग क्षेत्र पर चर्चा करते हैं और भारत के गेमिंग क्षेत्र को बढ़ावा देते हैं, तो यह आम जनता की आँखें खोल देता है। आम जनता गेमिंग और ई-स्पोर्ट्स उद्योग के बारे में जागरुक हो रही है। यह भारत के इस क्षेत्र में उज्ज्वल भविष्य की दिशा में प्रमुख कारक है।

अंत में मैं कुछ ऐसी बातों का उल्लेख करना चाहूँगा, जिनके बारे में मुझे लगता है कि सुधार की गुँजाइश है। यह उद्योग कड़ी मेहनत करने वाले युवाओं से भरा हुआ है, जो अक्सर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपने मानसिक स्वास्थ्य का त्याग करते हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान न देने की समस्या को बड़े संगठन तो दूर कर देते हैं, लेकिन छोटे या मध्यम स्तर के संगठनों को अब भी लम्बा रास्ता तय करना है। इसके अलावा, ई-स्पोर्ट्स शब्द को रमी, फैंटेसी गेम या तीन पत्ती जैसे असली पैसे वाले खेलों से अलग करने की आवश्यकता है। इन दो अलग-अलग क्षेत्रों को एक साथ जोड़ना ई-स्पोर्ट्स क्षेत्र और गेम डेवलपमेंट उद्योग दोनों के लिए एक बड़ा नकारात्मक कारक है। मुझे पूरा भरोसा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत में खेलों और गेमिंग पर चर्चा करने से ये चुनौतियाँ जल्द ही दूर हो जाएँगी। इसके साथ ही, मैं भारत को आगे बढ़ते हुए और डिजिटल राष्ट्र बनते हुए देखने के लिए उत्सुक हूँ जिसके लिए हम सभी काम कर रहे हैं।

मेस - चेरेनकोव के प्रमुख वायुमंडलीय प्रयोग

यह क्या है?

चेरेनकोव के प्रमुख वायुमंडलीय प्रयोग (मेजर एटमॉस्फेरिक चेरेनकोव एक्सपेरीमेंट) या एमएसीई (मेस) खगोल विज्ञान के लिए एक अत्यधिक उच्च ऊर्जा से युक्त अत्याधुनिक गामा-रे दूरबीन है। इसे भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र द्वारा अपने देश में विकसित किया गया है और इसे लद्दाख में एक विशेष रूप से चयनित स्थान पर स्थापित किया गया है।

मेस दूरबीन का क्या काम है?

मेस दूरबीन, अपनी अत्यधिक संवेदनशीलता के कारण सुपरनोवा अवशेषों, पल्सर और माइक्रो-क्वासर से गामा-किरणों का पता लगाने में सक्षम होगी। यह सुपरमैसिव ब्लैक होल में स्थित दूर की आकाशगंगाओं के केंद्रों में भी झाँकने में सक्षम होगी। इतना ही नहीं, यह इसके आसपास होने वाली उच्च ऊर्जा प्रक्रियाओं की खोज करने में भी सक्षम होगी। मेस दूरबीन का उपयोग ब्रह्मांड में डार्क मैटर की खोज करने और इसके रहस्यों को जानने के लिए किया जाएगा।

यह खास क्यों है?

मेस वर्तमान में एशिया में सबसे बड़ी चेरेनकोव दूरबीन है। यह दुनिया में इसी तरह की सुविधाओं के बीच सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित वेधशाला (ऑब्जर्वेटरी) है। इस साइट को इसके अद्वितीय वैज्ञानिक लाभों के लिए सावधानीपूर्वक काफी सोच समझकर चुना गया है, क्योंकि हानले में गामा-रे अवलोकन के लिए आवश्यक अत्यंत कम हल्का प्रदूषण है। इसके स्थान का लोंगीटुडिनल अवस्थिति का फायदा, मेस को दुनिया के अन्य भागों के लिए अदृश्य स्रोतों का निरीक्षण करने में सक्षम बनाता है।

क्या आप जानते हैं?

- **दुनिया में सबसे ऊँचा टेलीस्कोप** : समुद्र तल से 4270 मीटर ऊपर स्थापित मेस दुनिया का सबसे ऊँचा इमेजिंग वायुमंडलीय सेरेनकोव टेलीस्कोप (आईएसीटी) आधारित टेलीस्कोप है।
- सबसे बड़ी दूरबीनों में शुमार मेस (21 मीटर व्यास) अफ्रीका के नामीबिया में हेस (एचईएसएस)-II (28 मीटर व्यास) के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा टेलीस्कोप है।

मेस दूरबीन भारत और विश्व के लिए किस तरह मददगार साबित होगी?

मेस दूरबीन राष्ट्रीय और वैश्विक खगोल विज्ञान समुदाय को बहुविध-सन्देशवाहक समन्वित अवलोकन (मल्टी मैसेंजर कोऑर्डिनेटेड ऑब्जरवेशन) करने में सक्षम बनाएगी। यह अवधारणाओं के आदान-प्रदान के साथ-साथ सहयोग के लिए एक व्यापक मंच प्रदान करेगी। मेस दूरबीन रोजगार के अवसर भी प्रदान करेगी और हानले में बुनियादी ढाँचे के विकास को बढ़ावा देगी। मेस दूरबीन के बल पर भारतीय गामा-रे खगोल विज्ञान एक नए युग में प्रवेश करता है।

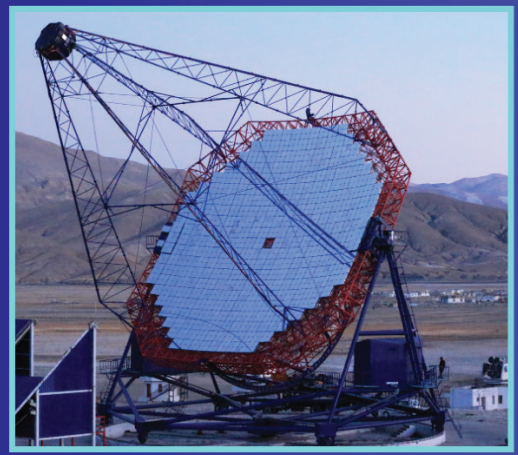

लद्दाख में एशिया का सबसे बड़ा इमेजिंग टेलीस्कोप

डॉ. अजीत कुमार मोहंती
सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग और
अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग

प्राचीन काल से ही भारत ने वैश्विक खगोलीय अनुसंधान का नेतृत्व किया है। भारत ने इस क्षेत्र में आधारभूत सिद्धांतों का योगदान दिया है। भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक डॉ. होमी भाभा ने कॉस्मिक-रे एयर शावर के अध्ययन का बीड़ा उठाया था। इसके बाद मेजर एटमॉस्फेरिक चेरेनकोव एक्सपेरीमेंट (MACE) अब वैज्ञानिक उत्कृष्टता की खोज में भारत की विरासत को आगे बढ़ा रहा है।

एमएसीई एक अत्याधुनिक, स्वदेशी रूप से विकसित गामा-रे दूरबीन है। यह वृहदाकार दूरबीन हानले, लद्दाख के हिमालयी क्षेत्र में स्थापित है। परमाणु ऊर्जा विभाग के भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) द्वारा स्थापित, एमएसीई भारत को उच्च-ऊर्जा खगोल भौतिकी के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनाता है।

21 मीटर व्यास वाले रिफ्लेक्टर के साथ एमएसीई वर्तमान में एशिया में सबसे बड़ी इमेजिंग दूरबीन है। समुद्र तल से 4,300 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एमएसीई दुनिया में अपनी तरह की सबसे ऊँची वेधशाला (ऑब्जर्वेटरी) भी है।

एमएसीई साइट को इसके अद्वितीय वैज्ञानिक लाभों के लिए सावधानीपूर्वक चुना गया है। हानले में भारत का पहला डार्क स्काई रिजर्व है। यहाँ गामा-रे अवलोकन के लिए आवश्यक अत्यंत कम हल्का प्रदूषण है। कुछ बड़े आकार की इमेजिंग गामा-रे दूरबीनों में से एक होने के नाते, एमएसीई हानले में अपनी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति के कारण एक महत्त्वपूर्ण लोंगीट्यूडिनल अंतराल को भरता है, हालाँकि यह साइट कुछ अनूठी चुनौतियाँ भी पेश करती है। खगोलविद् और तकनीशियन मौसम की प्रतिकूल स्थिति का सामना करते हैं, जहाँ तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से नीचे चला जाता है और ऑक्सीजन का स्तर समुद्र तल से 60 प्रतिशत से नीचे होता है। इससे वेधशाला का साल भर काम करना सुनिश्चित होता है।

एमएसीई दूरबीन आत्मनिर्भर भारत की भावना का एक अनुकरणीय परिणाम है। इसके घटक और उप-प्रणालियाँ बीएआरसी द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित की गई हैं। इसके परिणामस्वरूप कई उपलब्धियाँ और तकनीकी लाभ प्राप्त हुए हैं। देश में पहली बार उद्योग जगत के भागीदारों के सहयोग से डायमंड टर्निंग तकनीक का उपयोग करके असाधारण ऑप्टिकल गुणवत्ता वाले धातु दर्पण पहलुओं को विकसित किया गया है। अत्याधुनिक सिग्नल प्रोसेसिंग इलेक्ट्रॉनिक्स और एक उच्च गति डेटा अधिग्रहण प्रणाली से युक्त कस्टम-डिजाइन किए गए उच्च-रेजोल्यूशन इमेजिंग कैमरा भी एक तकनीकी चमत्कार हैं। एमएसीई की ड्राइव प्रणाली 180 टन की बड़ी यांत्रिक संरचना को 90 सेकंड के भीतर किसी भी दिशा में सटीक रूप से उन्मुख करने में सक्षम है। एमएसीई एक विश्व स्तर पर अत्यधिक ऊँचाई वाले स्वदेशी गामा-रे वेधशाला को विकसित करने में पहला बड़ा कदम है। अत्यधिक संवेदनशील एमएसीई दूरबीन सुपरनोवा अवशेषों, पल्सर और माइक्रोक्वासर से गामा-किरणों का पता लगाने में सक्षम होगी। एमएसीई सुपरमैसिव ब्लैक होल की मेजबानी करने वाली दूर की आकाशगंगाओं के केंद्रों का अध्ययन करने और उनके आस-पास होने वाली उच्च-ऊर्जा प्रक्रियाओं की खोज करने में सक्षम होगा। एमएसीई भू-आधारित गामा-रे खगोल विज्ञान के लिए सिस्टम बनाने में तकनीकी उत्कृष्टता को चिन्हित करता है और भारत में एक बिल्कुल नया मोर्चा खोलता है। अपनी कमीशनिंग के दौरान, एमएसीई ने हमारी आकाशगंगा से दूर स्थित कई सक्रिय आकाशगंगाओं में क्षणिक विस्फोटों से जुड़ी दिलचस्प खगोलीय घटनाओं का सफलतापूर्वक पता लगाया है। एमएसीई बहु-सन्देशवाहक खगोल विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय सहयोग में महत्त्वपूर्ण योगदान देने के लिए तैयार है। यह ब्रह्मांड में उच्चतम ऊर्जाओं का पता लगाने के लिए रास्ते खोल रहा है, जो ब्रह्मांड विज्ञान, खगोल भौतिकी और ब्रह्मांडीय-किरण अनुसंधान में मौलिक प्रश्नों का समाधान कर सकता है।

विज्ञान से परे एमएसीई स्थानीय रोजगार को बढ़ावा देता है। यह हानले के आस-पास बुनियादी ढाँचे को बढ़ावा देता है और खगोलीय केंद्र और खगोल-पर्यटन के लिए प्रमुख गंतव्य के रूप में क्षेत्र की स्थिति को मजबूत करता है। यह लद्दाख और देश भर में मेधावी युवाओं में वैज्ञानिक जिज्ञासा को प्रेरित करता है। एमएसीई साइट पर स्थापित एक समर्पित सौर ऊर्जा स्टेशन से स्वच्छ ऊर्जा के विषय पर काम करता है।

एमएसीई भारतीय गामा-रे खगोल विज्ञान के लिए एक नए युग की शुरुआत करता है और विकसित भारत के लिए मेगा-विज्ञान संयंत्रों की स्थापना में एक महत्त्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करता है।

सामरिक शक्ति
रक्षा निर्यात में भारत का बढ़ता प्रभाव

अजय कुमार
पूर्व रक्षा सचिव, आईआईटी कानपुर के
प्रतिष्ठित विजिटिंग प्रोफेसर

वर्ष 2023-24 में भारत का रक्षा निर्यात 21,000 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। आकाश तथा ब्रह्मोस मिसाइलों, आर्टिलरी गन, एचएएल के डोर्नियर विमान और नौसेना के जहाजों जैसी सामग्री के साथ 100 से अधिक देशों के साथ निर्यात किया जाने लगा। यह 2016-17 में किए गए 1,600 करोड़ रुपये मूल्य के निर्यात से 15 गुना अधिक है। यह बदलाव प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में रक्षा नीति में मजबूत आत्मनिर्भरता का परिणाम है। रक्षा निर्यात के लाभ, आर्थिक लाभ से कहीं आगे तक फैले हुए हैं, यह देश की उच्च तकनीकी क्षमताओं को प्रदर्शित करता है और साझा सुरक्षा हितों और परस्पर सहयोग पर आधारित रणनीतिक गठबंधनों को बढ़ावा देता है। वे तकनीकी नेतृत्व का संकेत देते हैं और ऐसी साझेदारी बनाते हैं, जो आमतौर पर कई दशकों तक चलती है। भारत के हालिया निर्यात में उछाल ने इसे रक्षा प्लेटफार्मों के साथ-साथ घटकों और उप-प्रणालियों के लिए एक विश्वसनीय, गैर-विस्तारवादी विश्वमित्र के रूप में स्थापित किया है।

रक्षा निर्यात को अत्यधिक विनियमित किया जाता है, ताकि संवेदनशील उपकरण अनधिकृत संस्थाओं तक न पहुँचें तथा निर्यात लाइसेंस केवल अंतिम उपयोगकर्ता और उद्देश्य के पूर्ण सत्यापन के बाद ही प्रदान किए जाते हैं। प्रमुख विनियमों में विदेशी व्यापार (विकास तथा विनियमन) अधिनियम 1992, शस्त्र अधिनियम 1959 और MTCR ऑस्ट्रेलिया समूह और वासेनार समझौते जैसी अंतरराष्ट्रीय संधियों के प्रति भारत की प्रतिबद्धताएँ शामिल हैं। DGFT युद्ध सामग्री की सूची रखता है तथा इन वस्तुओं के निर्यात के लिए DGFT लाइसेंस की आवश्यकता होती है। हथियारों और गोला-बारूद के रूप में सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला को परिभाषित करने वाले शस्त्र अधिनियम के अंतर्गत गृह मंत्रालय से लाइसेंस की आवश्यकता होती है। संक्षेप में कई नियामकों से मंजूरी की आवश्यकता होती है, जैसे सेना, नौसेना, वायु सेना, खुफिया ब्यूरो, गृह मंत्रालय, विदेश मंत्रालय, रक्षा उत्पादन विभाग और वाणिज्य मंत्रालय। पहले समस्या यह थी कि DGFT के लिए रक्षा निर्यात उनके बहुत बड़े निर्यात अधिदेश का एक छोटा, लेकिन जटिल हिस्सा था। गृह मंत्रालय भी निर्यात पर राष्ट्रीय सुरक्षा को प्राथमिकता देता था। परिणामस्वरूप मंजूरी मिलने में महीनों या वर्षों लग जाते थे। 2018 में प्रक्रियाओं को बड़े पैमाने पर सुव्यवस्थित करने से यह सब बदल गया। DDP के एक प्रस्ताव के आधार पर गृह मंत्रालय ने रक्षा निर्यात प्राधिकरण जारी करने के लिए शस्त्र अधिनियम 1959 की

धारा 10 के तहत अपनी शक्तियों को DDP को सौंपने पर सहमति व्यक्त की। इसके साथ DDP ने रक्षा निर्यात अनुमतियों के लिए 1 नवम्बर, 2018 को एक सुव्यवस्थित एसओपी पेश किया। इसके अतिरिक्त, एक ऑनलाइन पोर्टल लॉन्च किया गया, जो सभी एजेंसियों को सख्त समय सीमा और प्रतिक्रिया समय पर पारदर्शिता के साथ जोड़ता है। इसके परिणामस्वरूप कुछ दिनों और हफ्तों में अनुमोदन प्रदान किए जाने लगे। 2019 में DDP ने एक ओपन जनरल एक्सपोर्ट लाइसेंस शुरू करके निर्यात को और सुव्यवस्थित किया तथा वैश्विक रक्षा ओईएम को भारत को आउटसोर्स करने के लिए प्रोत्साहित किया। कुछ ही वर्षों में रक्षा निर्यात में उछाल आया।

प्रभावशाली वृद्धि को संख्या में गैर-लाइसेंस प्राप्त रक्षा और एयरोस्पेस वस्तुओं के निर्यात में समान रूप से ध्यान में नहीं रखा जाता है। वैश्विक ओईएम ने इन वर्षों के दौरान भारत में 400 से अधिक आपूर्तिकर्ता विकसित किए, जबकि अन्य ने अपनी सुविधाओं का विस्तार किया। 2020 में ऑर्डनेंस फैक्ट्री बोर्ड के निगमीकरण के कारण उनकी इकाइयों ने निर्यात बाजारों की तलाश शुरू कर दी। म्यूनिशन इंडिया लिमिटेड को विस्फोटक और गोला-बारूद के लिए बड़े ऑर्डर मिले। कुछ निजी फर्मों ने स्वदेशी ऑर्डर मिलने से पहले ही निर्यात करना शुरू कर दिया, जिससे उनकी गुणवत्ता और वैश्विक स्वीकृति का पता चला। इसके अतिरिक्त कुछ आईडीईएक्स स्टार्टअप ने अमरीका और अन्य बाजारों में अपने परिचालन का विस्तार किया।

भारत की प्रभावशाली रक्षा निर्यात वृद्धि केवल शुरुआत है। वैश्विक रक्षा और एयरोस्पेस उद्योग 2030 तक 1.4 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचने वाला है। इस गति को बनाए रखने के लिए भारत की रणनीति को अनुकूल भू-राजनीतिक गतिशीलता का उपयोग करने पर जोर देना चाहिए, ताकि अगले दशक में भारत को शीर्ष पाँच रक्षा निर्यातकों में स्थान मिल सके। इसे प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित पर विचार किया जा सकता है :

सरकार और सशस्त्र बलों को सरकारी नीति के हिस्से के रूप में भारतीय कम्पनियों से रक्षा निर्यात को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना चाहिए, जैसा कि अन्य देश कर रहे हैं।

विदेशी सरकारों के लिए खरीद को सरल बनाने के लिए सरकार-से-सरकार बिक्री तंत्र बनाया जाना चाहिए।

रक्षा LOC को रक्षा उद्योग की अनूठी विशेषताओं के साथ जोड़ा जाना चाहिए, जहाँ अक्सर प्रत्येक उत्पाद के लिए केवल एक या दो विक्रेता होते हैं। 2 सूचीबद्ध फर्मों को अपने विपणन प्रयासों के हिस्से के रूप में एलओसी को बंडल करने की अनुमति दी जानी चाहिए। एलओसी ब्याज दरें प्रतिस्पर्धी होनी चाहिए। जैसे-जैसे आईडीईएक्स स्टार्टअप द्वारा विकसित नवीन प्रौद्योगिकियाँ अंतरराष्ट्रीय रुचि प्राप्त करती हैं, वैसे-वैसे अधिक रणनीतिक लाभ के लिए वैश्विक स्तर पर स्वदेशी रूप से विकसित तकनीकों का प्रसार होता है।

मोदी सरकार की नीतिगत पहलों ने भारत को स्वतंत्रता के बाद पहली बार एक प्रमुख रक्षा निर्यातक बनने की स्थिति में पहुँचाया है। हाल ही में विकास में काफी तेज़ी आने के संकेत हैं। भारत के रक्षा निर्यात को नए स्तरों पर बढ़ाने के लिए आगे की नीति के उन्नयन के लिए यह आदर्श समय है।

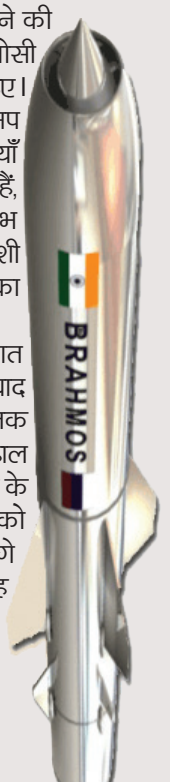

सशक्त डिजिटल इंडिया

सुरक्षित भविष्य के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा

"राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 पर डायल करें, cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें, परिवार और पुलिस को सूचित करें, सबूत संभाल कर रखें। 'रुको', 'बाद में सोचो' और फिर 'एक्शन लो', ये तीन चरण आपकी डिजिटल सुरक्षा के रक्षक बनेंगे।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

"यहाँ यह उल्लेखनीय है कि माननीय प्रधानमंत्री द्वारा अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में डिजिटल गिरफ्तारी का उल्लेख साइबर अपराध के खिलाफ लड़ाई में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ है क्योंकि इसने जागरूकता संदेश को देश के कोने-कोने तक पहुँचा दिया है।"

– राजेश कुमार
सीईओ, भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र, गृह मंत्रालय

यह उन्नत डिजिटल तकनीक का युग है। स्कूल या कॉलेज जाने वाले छात्र से लेकर सरकारी संगठनों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के अधिकारी तक, लगभग सभी लोग अपने फोन और कम्प्यूटर सिस्टम पर निर्भर हैं। यह निर्भरता इस तथ्य से चिह्नित होती है कि व्यक्तिगत और पेशेवर सभी डेटा इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ इन सिस्टम में संग्रहीत होते हैं, चाहे वे कितने भी संवेदनशील क्यों न हों। इंटरनेट पर सभी डेटा के साथ-साथ पासवर्ड होने के बावजूद, हमेशा साइबर हमलों का खतरा बना रहता है। पिछले कुछ वर्षों में ऐसे मामले बढ़ रहे हैं। साइबर अपराध के ऐसे बढ़ते मामलों के साथ डिजिटल सुरक्षा के उपायों को मजबूत करना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

'डिजिटल नागरिक' के रूप में संदर्भित भारतीय नागरिक तेज़ी से अपने दैनिक जीवन में इंटरनेट को शामिल कर रहे हैं। वे इसका उपयोग व्यावसायिक लेन-देन, शिक्षा, वित्तीय लेन-देन और ऑनलाइन सरकारी सेवाओं तक पहुँचने जैसी आवश्यक गतिविधियों के लिए कर रहे हैं। भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) द्वारा जारी वित्तीय वर्ष 2023-2024 के लिए वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में इंटरनेट ग्राहकों की संख्या में उछाल आया है। इंटरनेट ग्राहकों (डिजिटल नागरिकों) की कुल संख्या मार्च 2023 के अंत में 88.1 करोड़ से बढ़कर मार्च 2024 के अंत में 95.4 करोड़ हो गई। यह वार्षिक वृद्धि दर 8.30 प्रतिशत का संकेत है। इससे पिछले एक साल में 7.3 करोड़ इंटरनेट ग्राहक जुड़े। पिछले कई वर्षों में इस तरह की बढ़ोत्तरी माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 1 जुलाई, 2015 को शुरू किए गए डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का एक फलदायी परिणाम है।

देश में इंटरनेट ग्राहकों की बढ़ती संख्या के साथ डिजिटल सुरक्षा की चुनौती भी सामने आई है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) अपने प्रकाशन 'भारत में अपराध' में अपराधों पर सांख्यिकीय डेटा संकलित और प्रकाशित करता है। नवीनतम प्रकाशित रिपोर्ट वर्ष 2022 के लिए है। एनसीआरबी द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2020, 2021 और 2022 के दौरान साइबर अपराध के लिए धोखाधड़ी के तहत दर्ज मामले क्रमशः 10,395, 14,007 और 17,470 हैं। यह डेटा साइबर अपराधों की बढ़ती संख्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है।

सभी साइबर अपराध एक जैसे

नहीं होते। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर सूचीबद्ध कुछ साइबर अपराध हैं: बाल पोर्नोग्राफी या बाल यौन शोषण सामग्री (सीएसएएम), साइबर बुलीइंग, साइबर स्टॉकिंग, साइबर ग्रूमिंग, ऑनलाइन जॉब फ्रॉड, ऑनलाइन सेक्सटॉर्शन, विशिंग, सेक्सटिंग, एसएमएशिंग, सिम स्वैप घोटाला, डेबिट/क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी, प्रतिरूपण और पहचान की चोरी, फिशिंग, स्पैमिंग, रैनसमवेयर, वायरस, वर्म्स और ट्रोजन, डेटा वायलेशन, सेवाओं से इनकार/वितरित डीओएस, वेबसाइट डिफेसमेंट, साइबरस्क्वाटिंग, फार्मिंग, क्रिप्टोजैकिंग, ऑनलाइन ड्रग तस्करी, जासूसी इत्यादि। साइबर अपराधी ऐसी गैरकानूनी गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल हैं।

देश में साइबर अपराध की घटनाओं की इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत सरकार ने कई पहल की हैं। जनवरी 2004 में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने भारतीय कम्प्यूटर आपातकालीन प्रत्युत्तर टीम (सीईआरटी-इन) का गठन किया, जो कम्प्यूटर सुरक्षा से जुड़ी घटनाओं के होने पर कार्रवाई करने के लिए राष्ट्रीय नोडल एजेंसी है। इसका उद्देश्य भारत के साइबर स्पेस को सुरक्षित करना है। यह साइबर स्वच्छता केंद्र (बॉटनेट क्लीनिंग और मैलवेयर विश्लेषण केंद्र) भी संचालित करता है। यह केंद्र दुर्भावनापूर्ण प्रोग्रामों का पता लगाने और उन्हें हटाने के लिए मुफ्त टूल के साथ-साथ नागरिकों और संगठनों के लिए साइबर सुरक्षा सम्बंधी युक्तियाँ और सर्वोत्तम तौर-तरीका भी प्रदान करता है।

जनवरी, 2020 में साइबर अपराधों से व्यापक और समन्वित तरीके से निपटने के तंत्र को मजबूत करने के उद्देश्य से भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने देश में सभी प्रकार के साइबर अपराधों से निपटने के लिए एक संलग्न कार्यालय के रूप में 'भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र' (आई4सी) की स्थापना की। आई4सी के एक भाग के रूप में 'राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (एनसीआरपी)' (https://cybercrime.gov.in) शुरू किया गया है, ताकि डिजिटल नागरिक सभी प्रकार के साइबर अपराधों से सम्बंधित घटनाओं की रिपोर्ट कर सकें, जिसमें महिलाओं और बच्चों के खिलाफ साइबर अपराधों पर विशेष ध्यान दिया गया है। आई4सी अपने मॉड्यूल संयुक्त साइबर अपराध समंवय दल (जेसीसीटी) प्रबंधन सूचना प्रणाली के माध्यम से 2,95,000 से अधिक फर्जी सिम कार्ड, 46,000 से अधिक आईएमईआई, 2800 से अधिक वेबसाइट/यूआरएल, 595 मोबाइल एप्लिकेशन को ब्लॉक करने में सहायक है। राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन नम्बर 1930, नागरिकों को ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी दर्ज करने में मदद कर रहा है।

जैसे-जैसे भारत में इंटरनेट का उपयोग तेज़ी से बढ़ रहा है, डिजिटल इंडिया कार्यक्रम जैसी पहलों की बदौलत मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। भारत सरकार भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) जैसी एजेंसियों और सीईआरटी-इन और राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल जैसी पहलों के माध्यम से डिजिटल बुनियादी ढाँचे को सुरक्षित करने और साइबर खतरों के जटिल परिदृश्य का समाधान करने के प्रयासों का नेतृत्व कर रही है। हालाँकि, साइबर अपराध के खिलाफ लड़ाई के लिए निरंतर सहयोग, सतर्कता और तकनीकी उन्नति की आवश्यकता है। साइबर अपराधों की रिपोर्ट करने और उन्हें रोकने के लिए उपकरणों और संसाधनों के साथ नागरिकों को सशक्त बनाकर, भारत अपने सभी 'डिजिटल नागरिकों' के लिए एक सुरक्षित, अधिक मजबूत डिजिटल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

डिजिटल आत्मरक्षा

साइबर सुरक्षा के बारे में आपको क्या जानना चाहिए ?

आज के दौर में डिजिटल खतरे बढ़ रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाल ही में मन की बात सम्बोधन में 'डिजिटल अरेस्ट' घोटाले के खतरों के बारे में चर्चा की है। 'डिजिटल अरेस्ट' एक ऐसा स्कैम है। इसमें साइबर अपराधी सभी क्षेत्रों के लोगों को धोखा देकर और डरा कर उनकी मेहनत की कमाई को सौंपने के लिए बाध्य करते हैं। उन्होंने श्रोताओं को आश्वस्त किया कि कोई भी वैध जाँच एजेंसी कभी भी फोन या वीडियो कॉल के माध्यम से जाँच शुरू नहीं करेगी। उन्होंने सभी से खुद को ऑनलाइन सुरक्षित रखने के लिए तीन आवश्यक उपायों : 'रुको - सोचो - कार्रवाई करो' को याद रखने का आग्रह किया।

"हर वर्ग और आयु वर्ग के लोग डिजिटल अरेस्ट का शिकार होते हैं। लोगों ने अपनी मेहनत से कमाए लाखों रुपये सिर्फ डर के मारे गँवा दिए हैं। जब भी आपको ऐसा कोई कॉल आए, तो डरें नहीं। आपको पता होना चाहिए कि कोई भी जाँच एजेंसी कभी भी फोन कॉल या वीडियो कॉल के माध्यम से इस तरह की पूछताछ नहीं करती है। मैं डिजिटल सुरक्षा के तीन उपाय बता रहा हूँ। ये तीन उपाय हैं - 'रुको - सोचो - कार्रवाई करो'।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 115वें मन की बात में सम्बोधन

क्या करें ?

डी राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 डायल करें

आर cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें

आई परिवार और पुलिस को सूचित करें

पी साक्ष्य सुरक्षित रखें

क्या आप जानते हैं?

भारत ने इंटरनेशनल टेलीकम्युनिकेशन यूनियन (आईटीयू) द्वारा प्रकाशित वैश्विक साइबर सुरक्षा सूचकांक (जीसीआई) 2024 में शीर्ष स्तर यानी टियर 1 का दर्जा प्राप्त करके अपने साइबर सुरक्षा से जुड़े प्रयासों में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की हैं।

दुनिया में सबसे अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के मामले में भारत दूसरे स्थान पर हैं।

दुनिया के तत्क्षण डिजिटल लेन-देन के लगभग आधे मामले भारत में हो रहे हैं।

राष्ट्रीय संवेदनशील सूचना इंफ्रास्ट्रक्चर संरक्षण केंद्र (एनसीआईआईपीसी) देश में महत्त्वपूर्ण सूचना सम्बंधी इंफ्रास्ट्रक्चर की सुरक्षा करता है।

केंद्र सरकार द्वारा बनाया गया व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम भारतीय नागरिकों को वैश्विक उल्लंघनों से बचाता है।

सभी भारतीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में साइबर अपराध के लिए टोल-फ्री हेल्पलाइन 1930 सहायता प्रदान करता है।

डिजिटल अरेस्ट स्कैम और इंटरनेट पर सुरक्षित कैसे रहें

राजेश कुमार
सीईओ, भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र, गृह मंत्रालय

'डिजिटल अरेस्ट' एक साइबर अपराध है, जिसमें धोखेबाज सीबीआई, ईडी या सुप्रीम कोर्ट जैसी एजेंसियों के अधिकारियों का रूप धारण करके लोगों में डर पैदा करते हैं और उनसे पैसे ऐंठने के लिए दबाव डालते हैं।

वीडियो कॉल के जरिए पीड़ितों पर मानव तस्करी या मनी लॉन्ड्रिंग जैसे गम्भीर अपराधों का झूठा आरोप लगाया जाता है। अपराधी पीड़ितों पर लगातार वीडियो निगरानी रखते हैं, उन पर 'वित्तीय जाँच', जमानत या रिश्वत के रूप में धन हस्तांतरित करने का दबाव डालते हैं। यह घोटाला पीड़ितों को डर, अलगाव और मनोवैज्ञानिक दबाव के जरिए प्रभावित करता है, जिससे उन्हें काफी वित्तीय नुकसान होता है।

सीबीआई अधिकारी का रूप धारण करके एक धोखेबाज ने बेंगलुरु में एक व्यक्ति को डिजिटल अरेस्ट का शिकार बनाया।

यह देखा गया है कि डिजिटल अरेस्ट घोटाले की शुरुआत दक्षिण पूर्व एशिया और भारत में भी हुई है (आमतौर पर स्काइप के जरिए और अब तेजी से व्हाट्सएप वीडियो कॉल के जरिए)।

डिजिटल अरेस्ट की कार्यप्रणाली

1. पीड़ित को फर्जी भारतीय या अंतरराष्ट्रीय नम्बर से आईवीआर कॉल प्राप्त होती है, जिसमें ट्राई, आरबीआई, सीबीआई, ईडी आदि जैसे अधिकारियों का नाम लिया जाता है।

2. कॉल करने वाला व्यक्ति डर पैदा करने के लिए मनी लॉन्ड्रिंग जैसे गम्भीर आरोपों का दावा करते हुए लाइन ट्रांसफर कर देता है।

3. पीड़ित को स्काइप इंस्टॉल करने या व्हाट्सएप का उपयोग करने के लिए कहा जाता है, जिसमें घंटों से लेकर दिनों तक कॉल चलती है।

4. पीड़ितों को बाहरी सहायता से अलग कर दिया जाता है।

5. जालसाज वर्दी और जाली आईडी जैसे दृश्य प्रॉप्स का उपयोग करते हैं।

6. पीड़ित जाँच, जमानत या रिश्वत की आड़ में धन हस्तांतरित करता है।

7. रिकॉर्ड किए गए वीडियो का उपयोग करके लोगों को ब्लैकमेल किया जा सकता है।

8. अवैध खातों, एग्रीगेटर और क्रिप्टो के माध्यम से धन की लूट की जाती है।

समय-समय पर इस कार्यप्रणाली में परिवर्तन देखा जाता है, जैसे कि स्काइप खातों के सम्बंध में माइक्रोसॉफ्ट द्वारा की गई कार्रवाई के कारण दक्षिण पूर्व एशिया में अपराधी अब डिजिटल अरेस्ट करने के लिए व्हाट्सएप कॉल का सहारा ले रहे हैं। डिजिटल अरेस्ट के बारे में राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल www.cybercrime.gov.in पर दर्ज शिकायतों के एनसीआरपी डेटा के अनुसार केवल वर्ष 2024 के दौरान डिजिटल गिरफ्तारी पर 60,000 से अधिक शिकायतें प्राप्त हुई हैं, जिनमें 1600 करोड़ रुपये से अधिक की धोखाधड़ी की गई है।

I4C द्वारा की गई कार्रवाई

भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) ने डिजिटल गिरफ्तारी घोटालों के खिलाफ विभिन्न उपाय शुरू किए हैं। मई 2024 में ब्लैकमेल और डिजिटल अरेस्ट घोटालों पर अलर्ट पीआईबी के माध्यम से जारी किए गए थे, और I4C की खतरा विश्लेषण इकाई ने लगातार कानून प्रवर्तन एजेंसियों को ऐसे खतरों की सूचना दी है। आईटी अधिनियम की धारा 79(3)(बी) के तहत, I4C ने 1,705 स्काइप आईडी और 59,101 व्हाट्सएप अकाउंट ब्लॉक किए और आईपी ब्लॉकिंग पर समन्वय के लिए

अगस्त, 2024 में इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी, डीओटी और आईबी के साथ बैठकें कीं।

दूरसंचार दुरुपयोग के लिए, I4C ने 20.8 लाख संदिग्ध सिम कार्ड चिह्नित किए, 6.5 लाख सिम और 1.3 लाख आईएमईआई ब्लॉक किए। 91,383 पीओएस एजेंटों का डेटा कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ भी साझा किया गया। बैंकिंग में, 6.75 लाख अवैध खाते फ्रीज किए गए और समन्वय पोर्टल पर दुरुपयोग के हॉटस्पॉट मैप किए गए। I4C ने घोटालों में प्लेटफॉर्म के दुरुपयोग को रोकने के लिए व्हाट्सएप और माइक्रोसॉफ्ट को भी शामिल किया है।

I4C द्वारा जागरूकता पहल

I4C ने डिजिटल अरेस्ट घोटालों से निपटने के लिए व्यापक जागरूकता पहल शुरू की है। आधिकारिक I4C हैंडल साइबरदोस्त के माध्यम से नियमित सोशल मीडिया पोस्ट साझा किए जाते हैं। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय प्रकाशनों में समाचार पत्र विज्ञापन प्रकाशित किए गए। सितम्बर से अक्टूबर तक रेलवे स्टेशनों और हवाई अड्डों पर डिजिटल डिस्प्ले ने भी जागरूकता फैलाने में मदद की। प्रसार भारती पर एक अभियान में 30 सेकंड के रेडियो स्पॉट और पॉडकास्ट शामिल थे। सोशल मीडिया के प्रभावशाली लोगों ने जागरूकता पोस्ट को बढ़ावा

दिया, जिसे 5 मिलियन बार देखा गया, जबकि दिल्ली मेट्रो की घोषणाओं और ऑल इंडिया रेडियो सत्रों ने आउटरीच को और बढ़ाया। इसके अतिरिक्त I4C, प्रभाव को अधिकतम करने के लिए राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की पुलिस के साथ सहयोग करता है। उल्लेखनीय है कि माननीय प्रधानमंत्री द्वारा अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में डिजिटल अरेस्ट का उल्लेख किया जाना, साइबर अपराध के खिलाफ लड़ाई में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ है, क्योंकि इसने जागरूकता सन्देश को देश के कोने-कोने तक पहुँचाया है।

नागरिकों की ओर से कार्रवाई

नागरिकों को सतर्क रहने और डिजिटल अरेस्ट के बारे में जागरूकता फैलाने की सलाह दी जाती है। उन्हें पता होना चाहिए कि पुलिस अधिकारी, केंद्रीय जाँच ब्यूरो (सीबीआई), नारकोटिक्स विभाग, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई), प्रवर्तन निदेशालय और अन्य कानून प्रवर्तन एजेंसियाँ कभी भी वीडियो कॉल पर पूछताछ नहीं करती हैं। ऐसे कॉल आने पर नागरिकों को तुरंत साइबर क्राइम हेल्पलाइन नम्बर 1930 या www.cybercrime.gov.in पर घटना की सूचना देनी चाहिए। अगर उन्हें ऐसे कोई संदिग्ध कॉल आते हैं, तो उन्हें तुरंत उस नम्बर को ब्लॉक कर देना चाहिए और एनसीआरपी पोर्टल के 'रिपोर्ट एंड चेक सस्पेक्ट' सेगमेंट पर रिपोर्ट करना चाहिए। नागरिकों को सलाह दी जाती है कि वे I4C के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल साइबरदोस्त को फॉलो करें ताकि वे डिजिटल अरेस्ट जैसे साइबर क्राइम के प्रति अपडेट और सतर्क रहें।

विरासत के खेल के मैदान

भारत के स्वदेशी खेलों की खोज

“कितने ही स्कूलों में किसी दिन बच्चों को योग कराया जाता है, कभी किसी दिन एरोबिक्स के सेशन होते हैं, तो एक दिन स्पोर्ट्स स्किल पर काम किया जाता है, किसी दिन खो-खो और कबड्डी जैसे पारम्परिक खेल खेले जा रहे हैं और इसका असर भी शानदार होता है। अटेंडेंस अच्छी हो रही है, बच्चों का कन्सेन्ट्रेशन बढ़ रहा है और बच्चों को मज़ा भी आ रहा है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

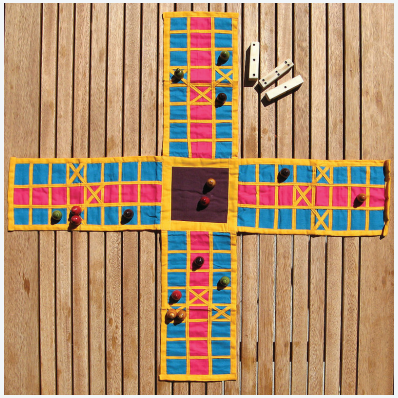

भारत अपनी विशाल सांस्कृतिक विरासत के साथ ऐसे कई स्वदेशी खेलों का घर है, जो इसके विविध क्षेत्रों की परम्पराओं और मूल्यों को दर्शाते हैं। पीढ़ियों से चले आ रहे ये खेल मनोरंजन से कहीं अधिक हैं; ये भारत के सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक ताने-बाने का अभिन्न अंग हैं। ये न केवल शारीरिक गतिविधि और दिमागी वर्जिश के अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि उन समुदायों के मूल्यों, कौशल और दर्शन को भी मूर्त रूप देते हैं जिनसे वे उत्पन्न होते हैं। इनमें से कई खेल सदियों पुराने हैं, भारतीय इतिहास में गहराई से समाए हुए हैं, और अक्सर रीति-रिवाज़ों, त्योहारों और सामुदायिक समारोहों से जुड़े होते हैं।

इन खेलों में आउटडोर गतिविधियाँ, टीम खेल, बोर्ड गेम और यहाँ तक कि मानसिक पहेलियाँ भी शामिल हैं, जिनमें एकाग्रता और रणनीति की आवश्यकता होती है। इनमें से कुछ खेल, जैसे कबड्डी, खो-खो या लूडो, अब भारत के भीतर और बाहर दोनों जगह व्यापक रूप से पहचाने जाते हैं, कई अन्य - जैसे लगोरी, गिल्ली डंडा और पचीसी - की गहरी क्षेत्रीय जड़ें हैं और वे अब भी ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में खेले जाते हैं, जबकि वे शहरी क्षेत्रों में कम जाने जाते हैं।

इन खेलों को जो खास बनाता है, वह है उनका उन लोगों और संस्कृतियों से जुड़ाव, जिनसे वे आते हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीन भारत में अपनी उत्पत्ति के साथ कबड्डी, केवल एक खेल नहीं है, बल्कि शारीरिक शक्ति, चपलता और टीम वर्क का प्रदर्शन है, जो ग्रामीण समुदायों की भावना को दर्शाता है। इसी तरह, प्राचीन खेल पचीसी पर आधारित लूडो, भाग्य, रणनीति और विकल्पों के परिणामों के बारे में सबक देता है, जो खिलाड़ियों को जीवन के महत्त्वपूर्ण सबक सिखाता है।

पारम्परिक खेलों के पुनः प्रारम्भ होने से भारतीय संस्कृति का पुनरुत्थान हुआ है। हाल के वर्षों में, खेलो इंडिया कार्यक्रम और फिट इंडिया मूवमेंट जैसी सरकारी पहलों ने भारत में पारम्परिक और स्वदेशी खेलों को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन पहलों का उद्देश्य नागरिकों में शारीरिक फिटनेस और तंदुरुस्ती की संस्कृति को बढ़ावा देना है, साथ ही भारत की समृद्ध खेल विरासत के संरक्षण को प्रोत्साहित करना है।

विभिन्न राज्यों में उनकी संस्कृति और परम्परा के अनुसार कई स्वदेशी खेल खेले जा रहे हैं। खेलो इंडिया के तहत संवर्धन के लिए मल्लखम्ब, कलारीपयट्टू, गतका, थांग-ता, योगासन और सिलम्बम जैसे स्वदेशी खेलों की पहचान की गई है। इस घटक के तहत बुनियादी ढाँचे के विकास, उपकरण सहायता, कोचों की नियुक्ति, कोचों के प्रशिक्षण और छात्रवृत्ति

के लिए अनुदान स्वीकृत किए जाते हैं। इसके अलावा हाल ही में हरियाणा के पंचकुला में संपन्न खेलो इंडिया यूथ गेम्स के तीसरे संस्करण में मल्लखम्ब, कलारीपयट्टू, गतका, थांग-ठा और योगासन को भी शामिल किया गया।

2018 में शुरू किए गए खेलो इंडिया कार्यक्रम ने हमारे देश में खेले जाने वाले सभी खेलों के लिए एक मजबूत ढाँचा तैयार करके और भारत को एक महान खेल राष्ट्र के रूप में स्थापित करके जमीनी स्तर पर भारत में खेल संस्कृति को पुनर्जीवित किया है। यह कार्यक्रम राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएँ आयोजित करता है, युवा एथलीटों को छात्रवृत्ति प्रदान करता है और जमीनी स्तर पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित करता है। यह कबड्डी, खो-खो और कुश्ती जैसे स्वदेशी खेलों को बढ़ावा देने के साथ-साथ युवा प्रतिभाओं को अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए मंच प्रदान कर कम प्रसिद्ध क्षेत्रीय खेलों को पुनर्जीवित करने का प्रयास करता है।

खेलो इंडिया, स्वदेशी खेलों को भारत के खेल पारिस्थितिकी तंत्र के व्यापक ढाँचे में एकीकृत करके न केवल इन परम्पराओं के संरक्षण को सुनिश्चित करता है, बल्कि 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के दृष्टिकोण के साथ भी जुड़ता है– यह भारत सरकार द्वारा राज्यों और क्षेत्रों में राष्ट्रीय एकीकरण, आपसी समझ और सांस्कृतिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया कार्यक्रम है। खेलों और विशेष रूप से पारम्परिक खेलों के

माध्यम से देश, क्षेत्रीय विभाजन को पाट सकता है, विविधता का प्रचार कर सकता है और एकजुट भारत की सामूहिक पहचान को मजबूत कर सकता है।

स्वदेशी खेल स्वाभाविक रूप से फिट इंडिया मूवमेंट के उद्देश्यों के साथ जुड़े हुए हैं, जो दैनिक जीवन में शारीरिक गतिविधि के महत्त्व पर जोर देते हैं। ये खेल हृदय स्वास्थ्य, चपलता, शक्ति और मानसिक परिवर्तनशीलता को बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिए, कलारीपयट्टू, एक प्राचीन मार्शल आर्ट है, जो अनुशासन और ध्यान केंद्रित करते हुए शारीरिक फिटनेस को बढ़ाता है। इसी तरह, मल्लखम्ब संतुलन और लचीलेपन में सुधार करता है, जिससे यह सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए एक उत्कृष्ट व्यायाम बन जाता है।

स्कूली पाठ्यक्रमों और सामुदायिक कार्यक्रमों में स्वदेशी खेलों को शामिल करने से जागरूकता और भागीदारी भी बढ़ी है।

इस तरह की पहल न केवल फिटनेस को बढ़ावा देती है बल्कि युवाओं में सांस्कृतिक गौरव और पहचान की भावना भी पैदा करती है।

विरासत के ये खेल के मैदान स्वस्थ और अधिक जुड़े हुए समुदाय के लिए नींव का काम करते हैं, जहाँ पारम्परिक खेलों का आनंद उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। इन प्रयासों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि भारत के स्वदेशी खेलों के समृद्ध ताने-बाने का विकास जारी रहे, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए फिटनेस और सांस्कृतिक पहचान दोनों को बढ़ावा मिले।

फिटनेस और तंदुरुस्ती के ज़रिए एकजुट और स्वस्थ भारत का निर्माण

फिटनेस, स्वास्थ्य और योग को बढ़ावा देने में भारत सरकार की पहल ने अपने नागरिकों की सेहत सुधारने में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है। फिट इंडिया मूवमेंट और योग को बढ़ावा देने जैसे कार्यक्रमों के जरिए सरकार ने लोगों में शारीरिक गतिविधि की आदतों को बढ़ावा दिया है।

इन योजनाओं को स्कूलों में लागू किया गया है, जिससे युवाओं को स्वस्थ आदतें अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। मैराथन और योग पहल जैसे फिटनेस अभियान आम लोगों को समग्र स्वास्थ्य पद्धतियों को अपनाने में मदद करते हैं, जिससे फिटनेस उनके दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन जाता है।

रन फॉर यूनिटी

हर साल 31 अक्टूबर को आयोजित होने वाला 'रन फॉर यूनिटी' सरदार वल्लभभाई पटेल की विरासत का स्मरणोत्सव है, जिनके प्रयासों से स्वतंत्रता के बाद 560 से अधिक रियासतों को एकजुट किया गया था और आधुनिक भारत की नींव रखी गई थी। यह कार्यक्रम सिर्फ राजधानी में ही नहीं, बल्कि भारत के तमाम शहरों में आयोजित किया जाता है। इसमें स्कूलों, कॉलेजों और स्थानीय समुदायों को शामिल करते हुए देश में एकता और परिवर्तनशीलता की भावना का प्रचार किया जाता है। यह कार्यक्रम, 'भारत के लौह पुरुष' को श्रद्धांजलि देने के साथ, भारतीयों को फिट रहने के लिए प्रोत्साहित करता है।

"आज, भारत हर क्षेत्र में अग्रणी बनने की राह पर दुनिया के सामने मजबूती से खड़ा है, जिसकी नींव सरदार पटेल ने रखी थी। रन फॉर यूनिटी देश की एकता के लिए सिर्फ एक संकल्प नहीं है; यह अब विकसित भारत के लिए एक प्रतिबद्धता बन गई है।

रन फॉर यूनिटी के लिए दिल्ली में विभिन्न संगठनों के करीब 8,000 लोग जुटे हैं। यहाँ युवाओं, बच्चों और विद्यार्थियों का उत्साह वास्तव में भारत की शक्ति का प्रतीक है।"

-अमित शाह, गृहमंत्री, भारत सरकार

धरती के स्वर्ग में मैराथन

श्रीनगर मैराथन, वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के जम्मू और कश्मीर पर्यटन विभाग के प्रयासों का हिस्सा है, जिसे न केवल एक फिटनेस इवेंट के रूप में बल्कि कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्भ को प्रदर्शित करने की पहल के रूप में भी आयोजित किया गया था। इस तरह के मैराथन एक सुलभ और शांतिपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में भारत की छवि को मजबूत करते हैं।

देश भर से 1700 से अधिक धावकों और 12 अन्य देशों ने 42 किलोमीटर की फुल मैराथन और 21 किलोमीटर की हाफ मैराथन में भाग लिया। इस आयोजन में दुनिया भर के धावकों की भागीदारी ने साहसिक खेलों के केंद्र के रूप में कश्मीर में आए परिवर्तन को उजागर किया, जो स्थानीय पर्यटन और व्यापक पर्यटन लक्ष्यों दोनों का समर्थन करता है।

"मैराथन अविश्वसनीय है। बड़ी संख्या में लोग इसे लेकर उत्साहित हैं और यह एक अद्भुत अनुभव रहा है -धरती के स्वर्ग में दौड़ना। यह आयोजन पर्यटन और खेलों को बढ़ावा देने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मैराथन में विभिन्न देशों के प्रतिभागी शामिल हुए, जिससे यह वास्तव में एक वैश्विक आयोजन बन गया।

लोग कश्मीर घूमने के लिए उत्सुक हैं और इस तरह का आयोजन दुनिया को एक शक्तिशाली सन्देश देता है कि हर जगह से लोग भाग लेने के लिए यहाँ आ रहे हैं, जो एक जबरदस्त उपलब्धि है।"

- सुनील शेट्टी, अभिनेता

सभी के लिए योग

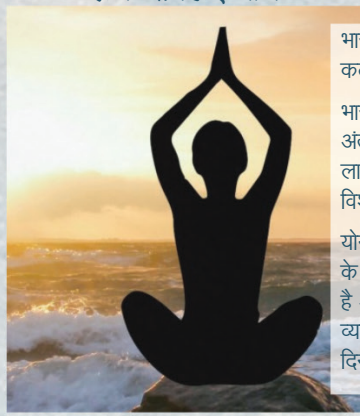

भारत में उत्पन्न प्राचीन पद्धति-योग, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण में सुधार के लिए एक वैश्विक माध्यम बन गया है।

भारत में यह स्वास्थ्य के प्रति राष्ट्र के दृष्टिकोण का अभिन्न अंग बन गया है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस जैसी पहल ने लाखों लोगों को इसके परिवर्तनकारी लाभों का अनुभव करने के लिए प्रेरित किया है। इन सरकारी प्रयासों ने योग की विश्वव्यापी मान्यता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

योग ने समूचे भारत में, स्कूली बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी उम्र के लोगों के जीवन को छुआ है, समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा दिया है, तनाव को कम किया है और दैनिक जीवन में संतुलन तथा शांति की भावना को प्रोत्साहिक है। इसके व्यापक अभ्यास ने सकारात्मक बदलाव किए हैं, जिससे यह आधुनिक स्वास्थ्य दिनचर्या का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।

"जब मैंने योगाभ्यास करना शुरू किया, तो मुझे पारम्परिक योगिक सफाई अभ्यासों, जैसे सूत्र नेति और जल नेति का उपयोग करके सर्दी और साइनस की समस्याओं से बहुत राहत मिली। उसके बाद मैंने और अधिक योगाभ्यास जारी रखे, जिससे मुझे अपने शरीर को स्वस्थ और मजबूत बनाने में मदद मिली।

योग शरीर और मन दोनों के लिए सर्वश्रेष्ठ उपचार है। जिस तरह दवाएँ शरीर पर काम करती हैं, उसी तरह योग शरीर, मन और आत्मा पर एक उपाय के रूप में कार्य करता है, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।"

- बाल मुकुंद सिंह, छह बार 'विश्व योग चैम्पियन'

फिट इंडिया स्कूल सप्ताह

फिट इंडिया स्कूल सप्ताह एक राष्ट्रव्यापी पहल है जिसका उद्देश्य स्कूलों को विद्यार्थियों के बीच फिटनेस और शारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसके अंतर्गत खेल, फिटनेस चुनौतियों और जागरूकता कार्यक्रमों जैसी गतिविधियों के माध्यम से स्कूल के पाठ्यक्रम में फिटनेस को शामिल करने पर जोर दिया जाता है। फिट इंडिया स्कूल सप्ताह के दौरान, स्कूल 4-6 दिनों के लिए विभिन्न प्रकार के खेल और फिटनेस गतिविधियों का आयोजन करते हैं।

यह पहल कम उम्र से ही शारीरिक तंदुरुस्ती की आदतें डालकर स्वस्थ, सक्रिय पीढ़ी को बढ़ावा देने के भारत के दृष्टिकोण को मजबूत करने में मदद करती है। देश भर के स्कूल इसमें भाग लेते हैं, जिससे फिटनेस शैक्षिक अनुभव का एक मूलभूत हिस्सा बन जाता है।

"फिट इंडिया स्कूल सप्ताह एक अद्भुत पहल है जिसे 2018 में लॉन्च किया गया था और सभी स्कूलों ने इसे बहुत सक्रियता से अपनाया है और वे फिटनेस को हमारे स्कूल सिस्टम में, हमारी स्कूली शिक्षा में शामिल कर रहे हैं।

बाल भारती पब्लिक स्कूल एक फिट स्कूल है जो हर साल फिट इंडिया स्कूल वीक का पालन करता है और फिटनेस को हमारे स्कूली पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाने के पूरे विचार पर विश्वास करता है। इससे भारत के हर उस स्कूल को सन्देश जाता है जो इस अभियान का हिस्सा नहीं हैं।"

- सोनिया छाबड़ा, प्रिंसिपल, बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Amit Shah
@AmitShah

देश के दो महापुरुष, सरदार वल्लभभाई पटेल जी और भगवान बिरसा मुंडा जी का एक ही लक्ष्य था - भारत की एकता। देश 31 अक्टूबर से सरदार साहब और 15 नवंबर से भगवान बिरसा मुंडा जी की 150वीं जन्मजयंती समारोह मनाने जा रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने आज #MannKiBaat में देशवासियों से दोनों महापुरुषों से प्रेरणा लेने और लौहपुरुष के विचारों एवं कार्यों को #SARDAR150 व धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा जी की शिक्षाओं को #BIRSAMUNDA150 के साथ साझा करने का आह्वान किया।

Translate post

CMO Haryana
@cmohry

रुको-सोचो-एक्शन लो !!
Stop-Think-Take Action....

आज रेडियो कार्यक्रम #MannKiBaat में प्रधानमंत्री श्री @narendramodi ने हर भारतीय को डिजिटल सुरक्षा के विषय में बताते हुए तीन चरणों की बात की है।

कोई भी सरकारी एजेंसी फोन पर धमकी नहीं देती और न ही Video Call पर पूछताछ करती है।

क़ानून में Digital Arrest जैसी कोई व्यवस्था नहीं है।

#SafeDigitalIndia

Translate post

Dharmendra Pradhan
@dpradhanbjp

आज प्रधानमंत्री मोदी जी ने "मन की बात" में "Digital arrest" और Digital Fraud" जैसे गंभीर मुद्दे पर बात की। आज के समय में जब हम अधिकतर कार्य ऑनलाइन कर रहे हैं, ऐसे में डिजिटल धोखाधड़ी एक बड़ा खतरा बन गई है। ठग अब न केवल सामान्य कॉल के जरिए, बल्कि वीडियो कॉल, सोशल मीडिया और अन्य ऑनलाइन माध्यमों का उपयोग करके जनता की मेहनत की कमाई को लूटने का षड्यंत्र कर रहे हैं।

ऐसे में, आज प्रधानमंत्री जी ने डिजिटल सुरक्षा के लिए "रुको, सोचो और एक्शन लो" का मंत्र दिया है। यह पहल देशवासियों को सतर्क और जागरूक बनने के लिए प्रेरित करेगी।

आइए, हम सभी प्रधानमंत्री जी के इस संदेश को गंभीरता से लें, किसी भी संदिग्ध कॉल या लिंक से बचें। किसी धोखाधड़ी की घटना होने पर तुरंत राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 पर संपर्क करें या cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें तथा दूसरों को भी डिजिटल सुरक्षा के लिए प्रेरित करें।

#MannKiBaat

Translate post

Dr Harsh Vardhan
@drharshvardhan

जिस संकल्प को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने #FitIndia अभियान के माध्यम से हर घर तक पहुंचाने का प्लान तैयार किया था, आज वह धरातल पर वाकई में बहुत अद्भुत नजर आता है।
#MannKiBaat में इसका जिक्र करते हुए मोदी जी ने बताया कि कैसे अब देश का हर आयुवर्ग अच्छी सेहत को लेकर सतर्क और संकल्पित है।

#StayFit #NewIndia
@BJP4India @BJP4Delhi

Translate post

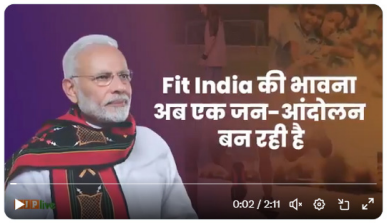

Shandilya Giriraj Singh
@girirajsinghbjp
Subscribe

मा०प्रधानमंत्री जी के 'मन की बात' को सुना। उनके विचारों से हमेशा कुछ नया सीखने को मिलता है और समाज सेवा, देशभक्ति और विकास के लिए प्रेरणा मिलती है। उनके शब्दों में देश की उन्नति का सपना और हर नागरिक के जीवन को बेहतर बनाने का संकल्प झलकता है। हमारे देश की संस्कृति, युवाओं की शक्ति, और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के उनके प्रयासों से नई ऊर्जा मिलती है।
#MannKiBaat

Translate post

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

Digital safety is paramount, and today's message from Hon PM Shri @narendramodi Ji during #MannKiBaat is a timely reminder for all.

No genuine investigative agency will ever reach out by phone or video call for official enquiries. Protect yourself from digital fraud by following the 3-step rule: Stop, Think, Take Action.

@PMOIndia

Jagat Prakash Nadda
@JPNadda

आज लाजपत नगर, नई दिल्ली में कार्यकर्ताओं के साथ आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के #MannKiBaat कार्यक्रम के 115वें संस्करण को सुना।

प्रधानमंत्री जी ने इस कार्यक्रम में हमारे महापुरुषों 'युगप्रवर्तक' स्वामी विवेकानंद, 'धरती आबा' बिरसा मुंडा, 'लौहपुरुष' सरदार वल्लभभाई पटेल जी के संदर्भ में जो प्रेरक प्रसंग व्यक्त किए हैं यह अत्यंत मूल्यवान हैं और हमें दिशा प्रदान करते हैं।

अनुसंधान, तकनीक आदि के क्षेत्र में भारतीय युवाशक्ति का वैश्विक योगदान प्रेरित करती हैं। जन-जन को एक सूत्र में पिरोने और 'विकसित भारत निर्माण' के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने वाले इस आत्मीय संवाद हेतु मैं मोदी जी का आभार प्रकट करता हूँ।

Translate post

Manoj Tiwari
@ManojTiwariMP

आज के #MannKiBaat कार्यक्रम में मोदी जी ने बताया कि इसी वर्ष सरदार पटेल (31oct) व भगवान बिरसा मुंडा (15Nov) की 150वीं जन्म जयंती वर्ष शुरु हो रही है।
इन दोनों महापुरुष ने अलग-अलग चुनौतियां देखी, लेकिन दोनों का vision एक था देश की एकता..
#Sardar150 और #birsamunda150 hashtag के साथ हम सबको उनकी गाथायें लिखनी चाहिये 🙏

Translate post

Nitin Gadkari
@nitin_gadkari

'मन की बात' के 115वें संस्करण में आज प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने अनेकविध विषयों पर बात की और अनेक प्रेरक विचार साझा किए।

उन्होंने देशवासियों को धनतेरस, दीवाली, छठ पूजा, गुरु नानक जयंती और सभी पर्वों की शुभकामनाएं दी।

पूरे उत्साह के साथ ये त्योहार मनाते हुए उन्होंने #Vocal4Local का मंत्र याद रखने का और त्योहारों के दौरान घर में स्थानीय दुकानदारों से खरीदा गया सामान इस्तेमाल करने का सभी से आह्वान किया।

#MannKiBaat

Translate post

Col Rajyavardhan Rathore
@Ra_THORe

माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के मन की बात रेडियो कार्यक्रम का सजीव प्रसारण, निष्ठवान कार्यकर्ताओं और स्नेहिल जनता के साथ देखना, सदैव नई प्रेरणा देता है।

#MannKiBaat

Translate post

Shivraj Singh Chouhan
@ChouhanShivraj

Animation की दुनिया में भारत नई क्रांति करने की राह पर है।

भारत के Gaming Space का भी तेजी से विस्तार हो रहा है।

Indian games भी इन दिनों दुनिया भर में popular हो रहे हैं।

Animation की दुनिया में 'Made in India' और 'Made by Indians' छाया हुआ है।

- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Translate post

Gajendra Singh Shekhawat
@gssjodhpur

देहरादून में आज माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के लोकप्रिय जनसंवाद कार्यक्रम मन की बात से मित्रों-सहयोगियों के साथ जुड़ा।

मन की बात सुनकर कर्म की दिशा निश्चित करने में स्पष्टता मिलती है।

#MannKiBaat

Translate post

मन की बात प्रधानमंत्री ने रेडियो पर अपने मासिक कार्यक्रम की 115वीं कड़ी में राष्ट्र को किया संबोधित

बिरसा मुंडा और सरदार पटेल की 150वीं जयंती मनाएगी सरकार : मोदी

जनांदोलन बन गया है फिट इंडिया

મોદીએ ૧૧૫મી વખત મન કી બાત દ્વારા સમગ્ર દેશ સાથે વાત કરી

ANIMATION અને GAMINGમાં ભારત નવી ક્રાંતિ લાવશે : પીએમ મોદી

જ્યારે પણ તમને આવો ફોન આવે તો સૌથી પહેલા તમારે ડરવું જોઈએ નહીં

ডিজিটাল প্রতারণায় সতর্ক থাকার আহ্বান প্রধানমন্ত্রীর

मन की बात प्रधानमंत्री ने दिया साइबर ठगों से बचने का मंत्र

डिजिटल अरेस्ट से डरें नहीं, रुकें-सोचें-एक्शन लें: मोदी

PM cautions people against 'digital arrest' scam by fraudsters

Instead of panicking, people should dial the national cyberhelpline number 1930 and report the incident on cybercrime.gov.in, Modi says

'డిజిటల్ అరెస్టు'కు... భయపడకండి

నేరాల్లో ఫోన్లకు బెంబేలెత్తకండి

'मन की बात' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिया 'डिजिटल अरेस्ट' से बचने का मंत्र

फ्रॉड कॉल आने पर रुको, सोचो और फिर एक्शन लो

शांत रहें और जल्दबाजी में कोई कदम न उठाएं

एनिमेशन की दुनिया में 'मेड इन इंडिया'

મન કી બાતનો 115મો એપિસોડ : PMએ ડિજિટલ અરેસ્ટ પર કહ્યું- જ્યારે તમને ફ્રોડ કોલ આવે તો થોભો, વિચારો અને પછી પગલાં ભરો

ડિજિટલ એરેસ્ટ મુદ્દે લોકોને સાવચેત રહેવા મોદીની અપીલ

સાવચેત રહો, ફોન કોલ્સ રેકોર્ડ કરો

સાયબર હેલ્પલાઇન પર ફોન કરો

ડિજિટલ ફ્રોડમાં સતત વધારો

PM મોદીએ મન કી બાતમાં આ મુદ્દાઓ પર વાત કરી

'डिजिटल अरेस्ट' पर पीएम मोदी ने देश को किया आगाह

बच के रहना रे बाबा! रुको समझो और फिर एक्शन लो

सतर्कता बरतें, फोन कॉल्स रिकॉर्ड करें

अब आत्मनिर्भर भारत अभियान एक जन-आंदोलन बन गया

'டிஜிட்டல் அரெஸ்ட்' என்ற பெயரில் மக்களை ஏமாற்றும்

மோசடி நபர்கள் மீது கடும் நடவடிக்கை

'மனதின் குரல்' நிகழ்ச்சியில் பிரதமர் மோடி எச்சரிக்கை

Self-reliance has not only become India's policy, it has become a passion: PM Modi

PM salutes indomitable spirit of Infantry ranks & veterans

ഡിജിറ്റൽ അറസ്റ്റ് ഇന്ത്യയിൽ ഇല്ല

ജാഗ്രതാനിർദേശവുമായി പ്രധാനമന്ത്രി

പണം നഷ്ടമായാൽ ഇതു മറക്കരുത്

'ਸਾਈਬਰ ਗ੍ਰਿਫ਼ਤਾਰੀਆਂ' ਦੇ ਘੁਟਾਲੇ ਤੋਂ ਬਚਣ ਲਈ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਜ਼ਰੂਰੀ: ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ

'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦੌਰਾਨ ਐਨੀਮੇਸ਼ਨ ਦੀ ਦੁਨੀਆ ਵਿਚ ਭਾਰਤੀ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਦੇ ਵੱਧਦੇ ਅਸਰ ਦੀ ਤਾਰੀਫ਼ ਕੀਤੀ

भारत एनिमेशन की दुनिया में नई क्रांति के लिए तैयार : मोदी

मन की बात : छोटा भीम का जिक्र, कहा-ढोलकपुर का ढोल दूसरे देश के बच्चों को भी लुभा रहा

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत एनिमेशन की दुनिया में नई क्रांति के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि भारतीय एनिमेशन कैरेक्टर, एनिमेशन फिल्मों और कंटेंट और क्रिएटिविटी को दुनियाभर में पसंद किया जा रहा है।

स्मार्ट फोन से लेकर सिनेमा स्क्रीन तक, गेमिंग कंसोल से लेकर वर्चुअल रियल्टी तक एनिमेशन हर जगह मौजूद है। मन की बात की 115वीं कड़ी में प्रधानमंत्री मोदी ने याद दिलाया कि कैसे जब छोटा भीम टीवी पर आना शुरू हुआ था तो बच्चों में अलग ही तरह का रोमांच होता था। आज ढोलकपुर का ढोल, सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि दूसरे देश के बच्चों को भी खूब लुभाता है। कृष्णा, हनुमान, मोटू-पतलू जैसे एनिमेशन कैरेक्टर दुनियाभर में लोकप्रिय हो रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि एनिमेशन की दुनिया में मेड इन इंडिया और मेक इन इंडिया छाए हैं। भारत के गेमिंग स्पेस का भी तेजी से विस्तार हो रहा है। देश में क्रिएटिव एनर्जी की एक लहर चल रही है।

आत्मनिर्भर भारत अब जन अभियान

पीएम मोदी ने कहा, एक जमाने में मोबाइल फोन आयात करने वाला भारत, आज, दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा निर्माता बन गया है। कभी दुनिया में सबसे ज्यादा रक्षा उपकरण खरीदने वाला भारत, आज, 85 देशों को निर्यात भी कर रहा है। अंतरिक्ष तकनीक में भारत, आज, चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर पहुंचने वाला पहला देश बना है। मोदी ने कहा, बेहतर बात यह है कि आत्मनिर्भरता का अभियान, अब सिर्फ सरकारी अभियान नहीं है। आत्मनिर्भर भारत अभियान, अब जन अभियान बन रहा है-हर क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल कर रहे हैं। उन्होंने कहा, इसी महीने लद्दाख के हानले में हमने एशिया की सबसे बड़ी इमेजिंग टेलीस्कोप मेस का भी उद्घाटन किया है। ये 4,300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और पूरी तरह स्वदेशी है।

भारत का टैलेंट विदेशी प्रोडक्शन कंपनियों का भी अहम हिस्सा बन रहे हैं। अभी आई स्पाइडर मैन या फिर ट्रांसफॉर्मर्स दोनों फिल्मों में हरिनारायण राजीव के योगदान को सराहा गया। पीएम ने कहा, भारत के एनिमेशन स्टूडियो डिज्नी और वार्नर ब्रदर्स जैसी जानी-मानी कंपनियों के साथ काम कर रहे हैं। 28 अक्तूबर को वर्ल्ड एनिमेशन डे मनाया जाएगा। आइए हम भी भारत को ग्लोबल एनिमेशन पॉवर हाउस बनाने का संकल्प लें।

आज मनाया जाएगा वर्ल्ड एनिमेशन डे

सरदार पटेल और बिरसा मुंडा का 150वां जयंती वर्ष मनाएं

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि देश में हर युग में कुछ चुनौतियां आईं तो हर युग में उनसे निपटने वाले असाधारण व्यक्तियों ने भी जन्म लिया। देश जल्द ही ऐसी दो हस्तियों का 150वां जयंती वर्ष मनाने वाला है। 31 अक्तूबर से सरदार पटेल का 150वां जयंती वर्ष शुरू होगा। इसके बाद 15 नवंबर से भगवान बिरसा मुंडा का 150वां जयंती वर्ष शुरू होगा।

अनंतनाग की फिरदौसा और उधमपुर के गोरीनाथ की कला को सराहा...पीएम ने कहा, बहुत सारे स्कूली बच्चे कैलिग्राफी यानि सुलेख में दिलचस्पी रखते हैं। अनंतनाग की फिरदौसा बशीर को कैलिग्राफी में महारत हासिल है, और इसके जरिये वे स्थानीय संस्कृति के कई पहलुओं को सामने ला रही हैं। फिरदौसा की कैलिग्राफी ने स्थानीय लोगों, खासकर युवाओं का ध्यान काफी आकृष्ट किया है। ऐसा ही एक प्रयास उधमपुर के गोरीनाथ भी कर रहे हैं। एक सदी से भी अधिक पुरानी सारंगी के जरिये वे डोगरा संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों को सहेजने में जुटे हैं।

PM calls for vigilance against online frauds

Aditi Agrawal

letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi warned the country about the scaremongering tactic of "digital arrest", that has been used to dupe Indians of lacs to crores of money, in his 115th episode of Mann Ki Baat on Sunday. He highlighted the social engineering tactics used by fraudsters to target victims that exploit people's fear and create "psychological pressure". In the face of it, Modi stressed on the need to stop, think and then act when people receive such calls.

> { NARENDRA MODI } PRIME MINISTER
> People have lost lakhs of rupees out of sheer fear... You should be aware that no investigative agency inquires through a phone call or a video call

"People from every class and age group fall victim to digital arrest. People have lost lakhs of rupees earned through their hard work, out of sheer fear. Whenever you receive such a call, don't be scared. You should be aware that no investigative agency inquires like this through a phone call or a video call," he said.

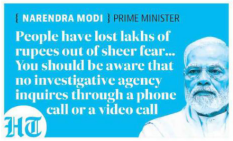

Modi explained the modus operandi used by the fraudsters: first, collect personal information about the victim so that

continued on →17

प्रधानमंत्री ने गिरफ्तारी का डर दिखाकर ठगने वालों से बचने का दिया मंत्र, कहा

कोई भी सरकारी एजंसी पैसे नहीं मांगती

भारतीय संस्कृति विश्व को अपनी ओर आकर्षित कर रही : पीएम मोदी

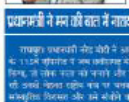

प्रधानमंत्री ने मन की बात में नारायणपुर के बुटलूराम माथरा को सराहा

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा- माथरा के प्रयासों को बढ़ावा देगी छत्तीसगढ़ सरकार

साइबर फ्रॉड के प्रति आगाह किया प्रधानमंत्री मोदी ने

फिट इंडिया जनांदोलन बन गया है

اینی میشن کی دنیا میں ہندوستان ایک نیا انقلاب برپا کرنے کی راہ پر گامزن

’بے شک ملک میں تخلیقی توانائی کی لہر چل رہی ہے‘ / وزیراعظم

نئی دہلی، 27 اکتوبر / ماینٹرنگ /

وزیر اعظم نریندر مودی نے کہا ہے کہ ہندوستان کے اینیمیشن سے تیار مواد کو پوری دنیا میں پسند کیا جا رہا ہے اور ہندوستان اینیمیشن کی دنیا میں ایک نیا انقلاب برپا کرنے کی راہ پر گامزن ہے۔ اتوار کو اپنے ماہانہ پروگرام من کی بات میں مسٹر مودی نے کہا، ”آپ کو وہ دن ضرور یاد ہوں گے جب ’چھوٹا بھیم‘ ٹی وی پر آنا شروع ہوا تھا۔ بچے تو اسے کبھی نہیں بھول سکتے ’چھوٹا بھیم‘ کو لے کر کتنا جوش تھا۔ آپ حیران ہوں گے کہ آج ’ڈھولک پور کا ڈھول‘ نہ صرف ہندوستان بلکہ دوسرے ممالک کے بچوں کو بھی اپنی طرف متوجہ کرتا ہے۔ اسی طرح ہمارے دوسرے اینی میٹڈ سیریز، ’کرشنا‘، ’ہنومان‘، ’موٹو-پتلو‘ کے چاہنے والے بھی پوری دنیا ہیں۔ ہندوستانی اینیمیشن بالخصوص یہاں کی اینی میٹڈ فلمیں اپنے مواد اور تخلیقی صلاحیتوں کی وجہ سے پوری دنیا میں پسند کی جا رہی ہیں۔ آپ نے دیکھا ہوگا کہ فون سے لے کر سنیما اسکرین تک اینیمیشن ہر جگہ موجود ہے۔ انہوں نے کہا، ”ہندوستان اینیمیشن کی دنیا میں ایک نیا انقلاب برپا کرنے کے راستے پر ہے۔ ہندوستان کا گیمنگ اسپیس بھی تیزی سے پھیل رہا ہے۔ ہندوستانی کھیل بھی ان دنوں پوری دنیا میں مقبول ہو رہے ہیں۔ چند ماہ قبل میں نے ہندوستان کے سرکردہ کھلاڑیوں سے ملاقات کی تھی اور ہندوستانی کھیلوں کی حیرت انگیز تخلیقی صلاحیتوں / 307

आत्मनिर्भरता हमारी नीति ही नहीं, जुनून भी: मोदी

■ विशेष संवाददाता, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम के जरिए देश को 115वीं बार संबोधित किया। इस कार्यक्रम में उन्होंने आत्मनिर्भर भारत, बिरसामुंडा, कार्टून कैरेक्टर छोटा भीम, भारतीय संस्कृति स्वामी विवेकानंद का जिक्र किया। साथ ही उन्होंने आत्मनिर्भर भारत की उपलब्धियों को गिनाते हुए डिजिटल अरेस्ट, भारतीय संस्कृति और फिट इंडिया कैंपेन पर भी लोगों को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता हमारी नीति ही नहीं, हमारा जुनून बन गया है। बहुत साल नहीं हुए, सिर्फ 10 साल पहले की बात है, तब अगर कोई कहता था कि भारत में कोई जटिल तकनीक विकसित की जा रही है तो कई लोगों को विश्वास नहीं होता था। कई तो उपहास उड़ाते थे, लेकिन आज वही लोग देश की सफलता को देखकर अचंभे में रहते हैं। आत्मनिर्भर हो रहा भारत हर क्षेत्र में कमाल कर रहा है।

गेमिंग में आगे बढ़ता भारत : पीएम ने कहा कि भारत के गेमिंग स्पेस का भी तेजी से विस्तार हो रहा है। इंडियन गेम्स भी इन दिनों दुनिया-भर में पॉपुलर हो रहे हैं। एनिमेशन की दुनिया में 'मेड इन इंडिया' और 'मेड बाइ इंडियंस' छाया हुआ है। उन्होंने कहा कि एनिमेशन की दुनिया में भारत नई क्रांति की राह पर है जबकि 'गेमिंग क्षेत्र' का भी विस्तार हो रहा है और ये दुनिया में लोकप्रिय हो रहे हैं। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि आत्मनिर्भर हो रहा भारत, हर क्षेत्र में कमाल कर रहा है। छोटा भीम, कृष्णा, हनुमान और मोटू-पतलू जैसे एनिमेशन चरित्रों की लोकप्रियता का उल्लेख करते हुए मोदी ने कहा कि यह सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देश के बच्चों को भी खूब आकर्षित करते हैं और इन्हें चाहने वाले भी दुनियाभर में हैं।

पीएम ने 'डिजिटल पर्यटन' की बढ़ रही लोकप्रियता का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि क्या पता दुनिया का अगला सुपर हिट एनिमेशन आपके कंप्यूटर से निकले! एक जमाने में भारत मोबाइल फोन आयात करता था और आज वह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मैन्युफैक्चर बन गया है, जबकि कभी दुनिया में सबसे ज्यादा रक्षा उपकरण खरीदने वाला भारत आज 85 देशों को निर्यात भी कर रहा है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत आज चंद्रमा के साउथ पोल पर पहुंचने वाला पहला देश बना है।

जन-आंदोलन बन रहा 'आत्मनिर्भर भारत'

पीएम ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत अभियान जन-आंदोलन बनता जा रहा है। इसी महीने हमने लद्दाख के हान्ले में एशिया के सबसे बड़े 'इमेजिंग टेलीस्कोप MACE' का उद्घाटन किया। यह 4300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है... एक ऐसी जगह जहां ठंड -30 डिग्री से भी कम है, जहां ऑक्सीजन की कमी है, वैज्ञानिकों और स्थानीय उद्योग ने वो कर दिखाया है जो एशिया के किसी और देश ने नहीं किया। हान्ले टेलिस्कोप भले ही दूर की दुनिया देख रहा हो, लेकिन ये हमें आत्मनिर्भर भारत की ताकत भी दिखा रहा है।

J&K artists receive national recognition in PM's *Mann Ki Baat*

Hails young Anantnag artist, Udhampur musician for promoting local heritage

Younus Rashid

Anantnag, Oct 27: In the 115th episode of his monthly radio program, "Mann Ki Baat," Prime Minister Narendra Modi lauded two residents of Jammu and Kashmir for their efforts in preserving and promoting local culture through art. He highlighted the achievements of a young calligrapher from Anantnag and a Sarangi player from Udhampur, who have been recognized for their unique contributions to cultural heritage.

During his address, PM Modi praised 20-year-old Firdousa Bashir from Anantnag for using calligraphy to depict various facets of local culture, a skill that has gained popularity among the youth in the region. "Many of our school children are interested in calligraphy. Through this, our handwriting remains clean, beautiful, and attractive. Today, it is being used in Jammu and Kashmir to popularise local culture," the Prime Minister said. He added, "Firdousa Ji's calligraphy has attracted locals, especially the youth, showcasing the beauty of the region's cultural heritage."

PM Modi also acknowledged Gori Nath from Udhampur, who has been preserving Dogra culture through the tunes of his century-old Sarangi. "Gori Nath Ji is engaged in preserving various forms of Dogra culture and heritage. Through his Sarangi, he narrates ancient stories and historical events related to his culture in an engaging way," said the Prime Minister.

He further emphasized that similar efforts across the country are being made by extraordinary individuals dedicated to preserving cultural heritage.

Speaking to Rising Kashmir, Firdousa expressed her joy and surprise at being mentioned by PM Modi. "I had never dreamt of being mentioned like this. I was doing calligraphy at home, away from the public eye, and selling my art locally to earn a living," she said. Firdousa shared that her journey began a year and a half ago after she passed her 12th grade. "By mentioning my name, my talent was recognized, and I hope others like me will also receive such recognition," she added.

We must resolve to make India global animation powerhouse: PM Modi

New Delhi, Oct 27: In his monthly edition of 'Mann Ki Baat' radio program, Prime Minister Narendra Modi asserted on Sunday that "we must resolve to make India a global animation powerhouse".

PM Modi said that India is on the way to bringing a revolution in the field of animation and highlighted the growth in India's gaming space.

In the 115th episode of 'Mann Ki Baat', PM Modi said, "...Like Chhota Bheem, our other animated series Krishna, Motu-Patlu, Bal Hanuman also have fans all over the world. India's animated characters and films are being liked all over the world due to their content and creativity..."

"India is on the way to bringing a revolution in the field of animation. India's gaming space is also growing rapidly. Indian games are also becoming famous all over the world," PM Modi said

"You must have seen from smartphones to cinema screens from gaming consoles to virtual reality, animation is everywhere," PM Modi added.

PM Modi also recalled his recent meeting with India's leading gamers.

"A few months back, I met India's leading gamers. Then I got an opportunity to know about Indian game's amazing creativity and quality. Really there is a wave of creative energy in the country. 'Made in India' and 'Made by Indians' are shining brightly in the world of animation," PM Modi said.

"You would be happy to know that today Indian talent is becoming a significant part of foreign productions. Be it today's Spider-Man or Transformers, Harinarayan Rajiv's contributions have been appreciated by people in both movies," the Prime Minister said.

PM Modi further said, "India's animation studios are working with world-famous production companies like Disney and Warner Brothers."

PM Modi emphasised that today original India content is being watched all over the world and said the animation sector has taken the form of an industry.

"...Today, our youths are creating original Indian content which has a reflection of our culture. They are being watched worldwide. The animation sector has today taken a form of an industry that is giving strength to other industries. Virtual Reality tourism today is getting famous... On October 28, World Animation Day will be celebrated. We must resolve to make India, a global animation powerhouse," PM Modi said. (ANI)

ہندوستان نیا انقلاب برپا کرنے کی راہ پر □ خود انحصاری کا جشن منانا چاہئے: مودی

Telangana Cheriyal artist gets PM Modi accolade for preserving 400-yr-old art

Sribala Vadlapatla

@timesofindia.com

Hyderabad: Known for his rare, unique Cheriyal paintings, Telangana artist, D Vaikuntham, received appreciation from Prime Minister Narendra Modi during his latest edition of Mann Ki Baat on Sunday.

The PM's commendation was made in light of the challenges faced by this 400-year-old art form, which, despite being recognised with a Geographical Indication (GI) tag, continues to fight for relevance. The artist and his family are among the two or three families in the entire state who have kept the art alive.

Interestingly, it was Vaikuntham's family that provided wooden plates adorned with paintings for the G20 meetings that took place in India last year.

"In different parts of the country, you will find many such extraordinary people who have come forward to preserve cultural heritage. D Vaikuntham has been engaged in popularising Cheriyal folk art for about 50 years now. His efforts to promote this art form related to Telangana are amazing. The process of making Cheriyal paintings is unique. It is in the form of a scroll... that brings forth stories. In that we get a complete glimpse of our history and mythology," the PM said during Mann Ki Baat.

Speaking to TOI later, Vaikuntham, who belongs to Siddipet, expressed his gratitude to the PM for acknowledging his efforts. He said: "His support will advance this art form." Elaborating further, Vaikuntham said: "Historically, this art was predominantly found in Siddipet and Karimnagar. Before the emergence of cinema and television, communities relied heavily on this art for storytelling. A few decades ago, there were approximately 10,000 artists in Telangana; however, now only two or three families, aside from our own, continue this tradition."

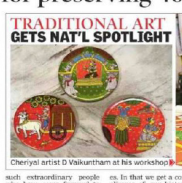

TRADITIONAL ART GETS NAT'L SPOTLIGHT

Cheriyal artist D Vaikuntham at his workshop

MODI'S MONTHLY 'MANN KI BAAT'

Stop, Think, Act: PM on Cyber Safety

Says probe agencies are working with states to deal with 'digital arrest' cases

Rakesh Mohan Chaturvedi

JP Nadda with other leaders listen to 'Mann Ki Baat' programme — IANS

New Delhi: Amid growing cases of cyber frauds in which common people are intimidated by callers posing as officials from the police, probe agencies or RBI to elicit information and dupe them of funds, PM Narendra Modi appealed to citizens in his monthly 'Mann ki Baat' broadcast to be wary while sharing a few steps to deal with the issue.

Modi said several people had asked him to speak on Digital Arrest, the term used for the cyber fraud menace where fraudsters make calls impersonating police personnel, or sleuths from CBI or Narcotics Control Bureau and at times the RBI to get information from unsuspecting people.

The Prime MInister underlined that it is very important for people to understand this "dangerous game" and the modus operandi of the gangs. The government has run information campaigns against cybercrimes on radio, television and newspapers from time to time. Telecom Regulatory Authority of Indiaand other government bodies have also issued statements cautioning people against sharing bank and credit/debit card details on calls made to them from unknown numbers. "Whenever you receive such a call, don't be scared. You should be aware that no investigative agency ever enquires like this through a phone call or a video call. I am enumerating the three steps to Digital Security. These three steps are: 'Stop, think, and take action'. As soon as you get a call, stop-do not panic, stay calm, don't take any hasty steps, don't give away your personal information to anyone; if possible take a screenshot and record it," PM Modi said.

The person should then think with a cool head before taking any step. "No government agency threatens you on the phone like this, neither enquires nor demands money on a video call like this. If you feel scared, then know that something is wrong," Modi said. **He also encouraged victims to spread the word about such cases so that more and more people are wary of cyber frauds. He suggested the hashtag- #SafeDigitalIndia- for this purpose.**

BIG TV LIVE

Mann Ki Baat: వాళ్ల మాటల విని మోసపోవద్దు, అలా చేస్తే మీ డబ్బులు గల్లంతు.. 'మన్ కీ బాత్'లో మోదీ కీలక విషయాలు వెల్లడి

Business Standard

Mann Ki Baat: PM Modi cites 'Chhota Bheem', praises Indian animation sector

daily Excelsior

Udhampur's Gouri Nath, Anantnag's Firdousa figure in PM's 'Mann Ki Baat'

ETV بھارت

اینیمیشن کی دنیا میں بھارت کا نیا انقلاب، ڈیجیٹل گرفتاری فریب، جانیے من کی بات میں کیا کیا بولے وزیراعظم مودی

ETV भारत

मन की बात में पीएम मोदी ने की अबूझमाड़ की लोक परंपरा और स्वच्छ भारत मिशन की चर्चा

जनसत्ता

'रुको, सोचो और एक्शन लो...', PM मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में बताए डिजिटल अरेस्ट से बचने के तीन स्टेप्स

moneycontrol

Mann Ki Baat: PM Modi bats for self-reliance, urges people to buy local products amid festive shopping

NBT नवभारत टाइम्स

डिजिटल अरेस्ट का पहली बार जिक्र, गेमिंग-एनिमेशन में तेजी से विस्तार पर सराहा, जानिए PM मोदी के मन की बात की खास बातें

QAUMI AWAZ قومی آواز

من کی بات: 'ڈیجیٹل اریسٹ' سے بچنے کے لئے وزیر اعظم مودی نے بتائے تین رہنما اصول

روزنامہ TAASIR URDU DAILY تاثیر تاسیر اردو دینک، پٹنہ

مرادآباد شہر کے 550 بوتھوں پر پی ایم مودی کی من کی بات سنی گئی

THE ECONOMIC TIMES

"Stop, Think, Act" against digital arrest: PM Modi shares Mann ki Baat on cyber crimes

THE NEW INDIAN EXPRESS

PM Modi hails Odisha's heritage in Mann Ki Baat

ThePrint

'Mann Ki Baat': PM Modi amazed by Ramayana performance in Laos, says "same devotion, dedication like Indians"

ZEENEWS

'Atmanirbhar Bharat Campaign Becoming A Mass Movement': PM Modi In 'Mann Ki Baat'

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

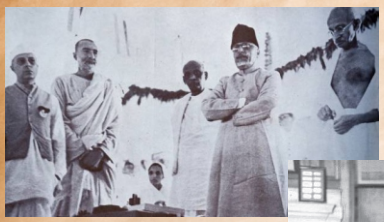

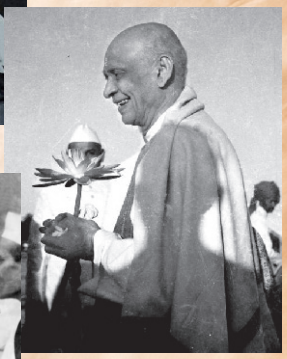

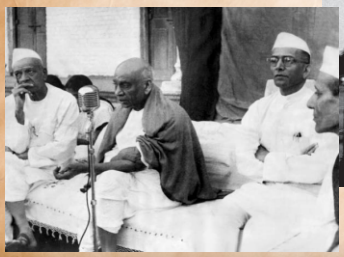

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार